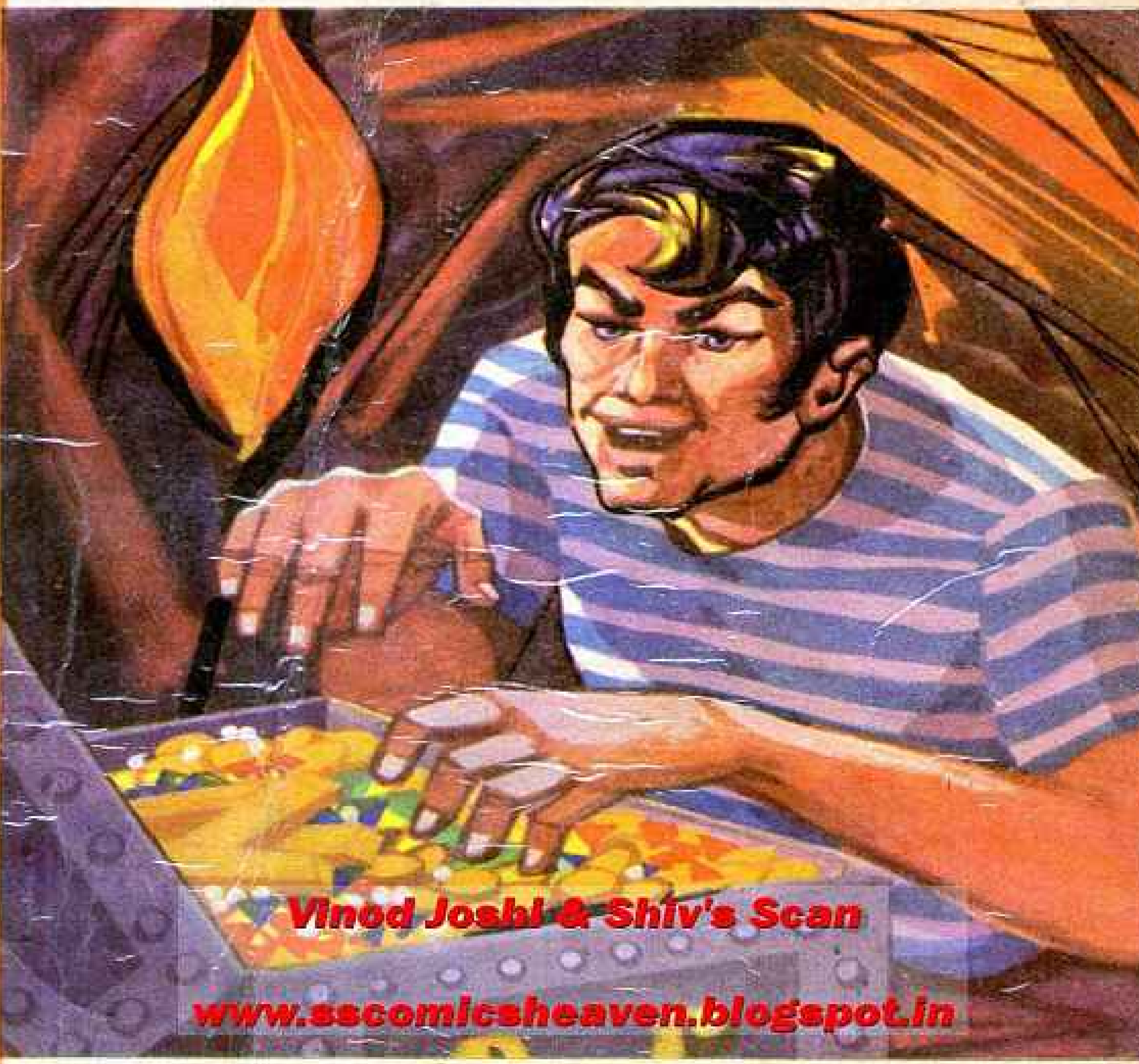
किशोर उपन्यास

कैदी की करामात



अलेक्ज़ेंडर ड्यूमा के प्रसिद्ध उपन्यास 'दि काउण्ट आफ मान्टे क्रिस्टो' का सरल रूपान्तर

कैदी की करामात



अलेक्जेंडर ड्यूमा के प्रसिद्ध उपन्यास

THE COUNT OF MONTE CHRISTO

का सरल हिन्दी रूपान्तर

रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

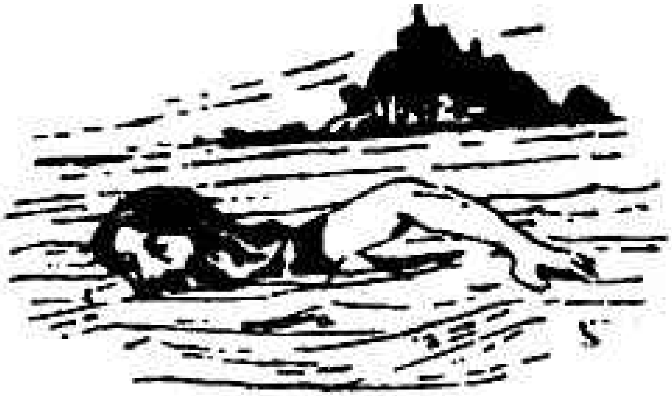
शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित

मूल्य : आठ रुपये (8.00)

QAIDI KI KARAMAT (Novel), by Alexander Dumasa

कैदी की करामात





कैदी की करामात

यह फ्रांस देश की कहानी है। उस समय फ्रांस के पुराने राज-वंश का पतन हो गया था। फ्रांस के निवासियों ने अपने देश में प्रजातन्त्र की स्थापना की थी। लेकिन प्रजातंत्र ज्यादा दिन टिका नहीं। तुमने नेपोलियन का नाम तो सुना ही होगा। वह प्रजातन्त्र शासन में एक साधारण सेनापति था, लेकिन अपनी बुद्धि और साहस का प्रयोग करके देखते-देखते वह फ्रांस का सबसे शक्ति-शाली व्यक्ति बन गया और एक दिन उसने अपने आपको फ्रांस का सम्राट घोषित कर दिया।

लोग उसके आतंक से डरते थे, लेकिन एक साधारण-से सिपाही को एकाएक सम्राट बनते देखकर मन ही मन उससे जलते रहते थे। इसी बीच यूरोप के देशों में फ्रांस से युद्ध छिड़ गया। लोगों ने नेपोलियन का साथ देने से आनाकानी करना शुरू किया। नेपोलियन अकेला क्या कर सकता था! अन्त में उसे राजगद्दी छोड़कर अलग हट जाना पड़ा। वह एल्बो नाम के एक द्वीप में चला गया और वहीं रहने लगा। इस मौके का लाभ उठाकर उसके विरोधियों ने पुराने राजवंश के एक बुड्ढे को कहीं से खोज निकाला और उसे फ्रांस के राजसिंहासन पर बैठा दिया।

लेकिन फ्रांस की जनता इससे खुश नहीं हुई। लोग नेपोलियन

से डरते थे, उससे जलते थे, लेकिन साथ ही उसे चाहते भी थे। उन्होंने गुप्त रूप से नेपोलियन को फिर से लाने का उपाय सोचना शुरू किया। जनता के खास-खास नेताओं ने नेपोलियन से चिट्ठी-पत्री शुरू कर दी। इनमें कई तरह के लोग थे, जो एल्बो द्वीप से नेपोलियन के पत्र लाते थे और फ्रांस से खास-खास नेताओं के पत्र नेपोलियन के पास ले जाते थे।

फ्रांस के दक्षिण में मार्सेल्स नाम का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। उस समय उस नगर में मोरेल नाम का एक आदमी रहता था। वह एक बड़ा व्यापारी था। दूर-दूर के देशों में उसका व्यापार चलता था। कई जहाज़ उसका माल लादकर देश-परदेश जाते थे। इनमें से एक जहाज़ का नाम 'फराओ' था। इस जहाज़ में एडमण्ड दान्ते नामक एक युवक काम करता था। उसके जीवन की यह कहानी है।

जिस जहाज में एडमण्ड काम करता था, उसका कप्तान भी चुपके-चुपके नेपोलियन के पास चिट्ठी-पत्री लाया-ले जाया करता था। एक बार की बात है, फराओ जहाज़ कलकत्ता से माल भरकर वापस लौट रहा था। रास्ते में जहाज़ का बूढ़ा कप्तान अचानक बीमार पड़ गया। जहाज़ में जो कुछ दवाई वगैरह थी उससे उसका इलाज करने की कोशिश की गई, लेकिन देखते-देखते उसकी बीमारी बढ़ती गई।

जहाज़ के कर्मचारियों और दूसरे लोगों को लगा कि कप्तान का अन्त समय निकट आ गया है और अब वह बच नहीं सकेगा। इस बात से सबसे अधिक खुशी जहाज़ के एक खलासी को हुई, जिसका नाम था डैंग्लर्स। उस बूढ़े कप्तान के बाद डैंग्लर्स ही कप्तान बनने वाला था, क्योंकि वही सबसे बड़ा खलासी था। लेकिन दुर्भाग्यवश उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी। एक दिन बूढ़े कप्तान ने सब लोगों को बुलाकर कहा, 'मेरा अब कोई ठिकाना नहीं। किसी भी दिन ऊपर से बुलावा आ सकता है। इसलिए जब तक अपने मालिक जहाज़ के लिए किसी दूसरे



कप्तान का इन्तजाम नहीं कर देते, तब तक के लिए मैं एडमण्ड को कप्तान बनाता हूं । आज से वही मेरा काम सम्भालेगा ।'

यह सुनकर डेंग्लर्स की सारी इच्छाओं पर पानी फिर गया । वह कप्तान बनना चाहता था, परन्तु एक दूसरे खलासी को कप्तान बना दिया गया । उसे बहुत गुस्सा आया । फौरन वह कप्तान के पास से चला आया । एडमण्ड के विरुद्ध उसका मन ईर्ष्या से भर उठा । उसने मन ही मन उससे बदला लेने का निश्चय किया । उधर जहाज़ के दूसरे खलासी एडमण्ड को बहुत चाहते थे । उन्होंने एडमण्ड को खुशी-खुशी अपना कप्तान

स्वीकार कर लिया ।

बूढ़े कप्तान ने एडमण्ड को कप्तान बनाने के बाद अपने कमरे में बुलाया और वहां खड़े दूसरे खलासियों को हाथ के इशारे से बाहर जाने को कहा । सब बाहर निकल आए । डैंग्लर्स फौरन ताड़ गया कि कप्तान एडमण्ड को कोई गुप्त बात बताना चाहता है, इसीलिए उसने सबको वहां से हटा दिया है । सब लोग हट गए, लेकिन डैंग्लर्स वहीं एक दरवाजे के पीछे छिपकर उनकी बातें सुनने लगा ।

अन्दर कप्तान ने एडमण्ड के हाथ में एक मुड़ा हुआ कागज़ दिया और कहा, 'एडमण्ड, तुम्हें मेरी एक बात माननी होगी । यह काम करना ही चाहिए । देखो, जब तुम देश लौटो तो पेरिस जाकर इस आदमी से ज़रूर मिलना और यह कागज़ उसे दे देना । लेकिन होशियार रहना, किसी को भी इस बारे में कुछ मालूम न हो ।'

एडमण्ड को यह सब कुछ अजीब-सा लगा । लेकिन वह कप्तान का आदर करता था, इसलिए वह इस काम के लिए राज़ी हो गया । लेकिन उसे यह मालूम न था कि यह सब क्या है । सिर्फ कागज़ पर उसने नाम पढ़ा तो उस पर किसी मस्यू नोर्तिये का नाम लिखा था । साथ ही उसके घर का पता लिखा था । उसने कप्तान से कहा, 'आप किसी बात की चिन्ता न कीजिए । मैं यह कागज़ ज़रूर ठीक पते पर पहुंचा दूंगा ।'

कप्तान ने शान्ति की सांस ली । इधर बाहर खड़ा-खड़ा डैंग्लर्स सब सुन रहा था । उसे फौरन मालूम हो गया कि यह सब क्या मामला है । उसने ताड़ लिया कि नेपोलियन की चिट्ठी है और वह बूढ़ा कप्तान खुद नेपोलियन के पास से इस चिट्ठी को लाया है । वह मन ही मन हंसा और उसने एडमण्ड से बदला लेने की तरकीब सोचनी शुरू की । वह जानता था कि अगर इस चिट्ठी की बात अधिकारियों को मालूम हो जाए तो एडमण्ड मुसीबत में पड़ सकता है ।



2

ठीक समय पर जहाज़ बन्दरगाह में दाखिल हुआ। जहाज़ का मालिक मोरेल जहाज़ देखने आया। एडमण्ड ने उससे सारी बात बतला दी। मोरेल पहले से ही एडमण्ड से खुश रहता था। अब उसे पूरे जहाज़ का काम सम्भालते देखकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने बातचीत में यह इशारा किया कि एडमण्ड को ही जहाज़ का कप्तान बना दिया जाएगा।

मालिक से बातचीत करके और फिर जहाज़ की ठीक से व्यवस्था करके एडमण्ड घर लौटा। घर पर उसका बूढ़ा पिता था और मर्सादिस नाम की एक सुन्दर लड़की भी वहीं रहती थी जिसके साथ एडमण्ड का विवाह होने वाला था।

उधर डेंग्लर्स ने एडमण्ड और मालिक के बीच क्या बात-चीत हुई, इसे मालूम कर लिया। यह जानकर कि मालिक एडमण्ड को ही कप्तान बनाएगा, उसकी बची-खुची आशा भी समाप्त हो गई। जब वह जहाज़ से बाहर आया तो एडमण्ड के खिलाफ ईर्ष्या से उसका मन भर उठा था। उसने कसम खाई कि वह एडमण्ड का सर्वनाश किए बिना चैन से नहीं बैठेगा। यह सब सोचते-सोचते वह एक शराबखाने में शराब पीने के लिए घुस गया। वहां एक कोने में उसे एक आदमी बैठा दिखाई दिया, जिसे वह पहचानता था। उसका नाम फर्नान्द था। डेंग्लर्स यह भी जानता था कि फर्नान्द मर्सीदिस का दूर का रिश्तेदार है और मर्सीदिस के साथ एडमण्ड की शादी होने वाली है।

मर्सीदिस और फर्नान्द बचपन में साथ-साथ खेले-कूदे थे और एक-दूसरे को बहुत मानते थे। लेकिन फर्नान्द बाद में मन ही मन मर्सीदिस से शादी करने के मनसूबे बांधने लगा।

मर्सीदिस इसके लिए राजी नहीं हुई, क्योंकि वह उसे अपने भाई की तरह मानती थी। इसके अलावा वह एडमण्ड को बहुत चाहती थी। कुछ दिनों बाद मर्सीदिस और एडमण्ड के विवाह की बात भी पक्की हो गई। लेकिन इतने पर भी फर्नान्द ने आशा नहीं छोड़ी। वह बराबर इसी कोशिश में लगा रहता था कि किसी तरह मर्सीदिस उससे शादी करने के लिए राज़ी हो जाए। उसे मालूम हो गया था कि एडमण्ड यात्रा से लौट आया है और उसे कुछ दिन की छुट्टी भी है तथा इसी बीच दोनों का विवाह होने वाला है। इसीलिए बहुत निराश होकर वह शराबखाने के एक कोने में बैठा था।

डेंग्लर्स उसके पास जा पहुंचा और बात ही बात में उसने फर्नान्द के मन का हाल जान लिया। उसे मालूम हो गया कि फर्नान्द एडमण्ड से बहुत नाराज़ है। बस, फिर क्या था, डेंग्लर्स तो इसी मौके की तलाश में था। उसने फर्नान्द से कहा, 'देखो फर्नान्द, मैं तुम्हारी मुश्किल बड़े मज़े से आसान कर सकता हूं और एडमण्ड को तुम्हारे रास्ते से हटा सकता हूं। लेकिन एक शर्त है।'

डेंग्लर्स ने आसपास ध्यान से देखा और फिर चुपके से उससे कहा, 'तुम्हें एक चिट्ठी लिखनी पड़ेगी।'

'चिट्ठी ? किसके नाम ?'

'तुम यह सब मत पूछो। बस, मैं जिस तरह कहता हूं लिखते जाओ।'

फर्नान्द की समझ में कुछ नहीं आया। वह इससे काफी घबरा गया। लेकिन फिर भी उसने एक नौकर से कागज़-कलम मंगाया और लिखना शुरू किया। चिट्ठी मार्सेल्स के मेयर के नाम थी। उसमें लिखा गया—एक राजभक्त नागरिक आपको सूचित करना चाहता है कि मोरेल की कम्पनी में फराओ नाम के जहाज़ में काम करने वाला एक खलासी—एडमण्ड दान्ते, जो अब उसका कप्तान बना दिया गया है, राजा के विरुद्ध चलने वाले

षड्यन्त्रों में भाग ले रहा है। वह एल्बो द्वीप से नेपोलियन के पास से एक खास चिट्ठी लाया है। अगर उसे गिरफ्तार कर लिया जाए और ठीक से जांच-पड़ताल की जाए तो चिट्ठी उसके पास मिल सकती है। चिट्ठी या तो उसके पास है या जहाज़ में उसके कमरे में कहीं छिपाकर रखी गई है।'

यह चिट्ठी गुमनाम थी और इसके नीचे किसी का दस्तखत नहीं था। डेंग्लर्स ने कहा, 'कहो, क्या राय ? देखा तुमने ? अब तुम एडमण्ड से बड़ी आसानी से बदला ले सकते हो और उसे अपने रास्ते से हटा सकते हो।'

लेकिन फर्नान्द एडमण्ड का इतना बड़ा नुकसान करने से हिचक रहा था। उसने काफी आनाकानी की और इस षड्यन्त्र से दूर रहना चाहा। डेंग्लर्स बार-बार उससे कह रहा था कि यह चिट्ठी तुम मेयर के पास पहुंचा दो, बाकी तुम्हें और कुछ नहीं करना पड़ेगा। सब अपने-आप हो जाएगा। लेकिन फर्नान्द डर रहा था। डेंग्लर्स की समझ में नहीं आ रहा था कि किस तरह उसे एडमण्ड के खिलाफ भड़काए।

इतने में अचानक डेंग्लर्स की बाहर सड़क पर नजर पड़ी तो उसने देखा कि एडमण्ड मर्सीदिस के साथ सड़क पर चला जा रहा था। वह उसके साथ घूमने निकला था। डेंग्लर्स ने फौरन मौके का लाभ उठाया और सड़क की ओर इशारा करके फर्नान्द से कहा, 'देखो, वे दोनों चले जा रहे हैं। एडमण्ड उसके साथ घूमने निकला है। अगर तुम यह चाहते हो कि तुम भी इसी तरह मर्सीदिस के साथ घूम-फिर सको और अन्त में एक दिन उसे अपनी बना सको तो तुम्हें एडमण्ड के खिलाफ कुछ न कुछ करना चाहिए। मैंने तुम्हें सबसे आसान रास्ता बतला दिया है।'

फर्नान्द पर इसका वही असर पड़ा जो आग में घी का पड़ता है। मारे ईर्ष्या के वह जल उठा और एडमण्ड के खिलाफ सब कुछ करने को तैयार हो उठा। उसने कागज़ जेब में रख लिया।

थोड़ी देर बाद ही वह शराबखाने के बाहर निकल आया। फिर सबसे पहला काम जो उसने किया वह था, चिट्ठी को डाक के डिब्बे में छोड़ना।

डेंग्लर्स की खुशी की सीमा न रही। उसका काम पूरा हो गया था। वह मजे में गुनगुनाता हुआ घर लौट गया।

कुछ दिनों बाद एडमण्ड के विवाह की तिथि आ पहुंची। विवाह की हंसी-खुशी में भाग लेने के लिए उसने जहाज़ के सभी खलासियों और अपने दूसरे इष्ट मित्रों को निमन्त्रित किया। फर्नान्द और डेंग्लर्स भी उसके मित्र की तरह उसे बधाई देने के लिए आ पहुंचे। जहाज़ के मालिक मोरेल भी अपने साथियों के साथ आए। सब लोग हंसी-मजाक और खाने-पीने में लगे थे कि इतने में अचानक पुलिस के कुछ आदमी वहां आ पहुंचे। दो-तीन सिपाही दरवाज़े पर रास्ता रोककर खड़े हो गए।

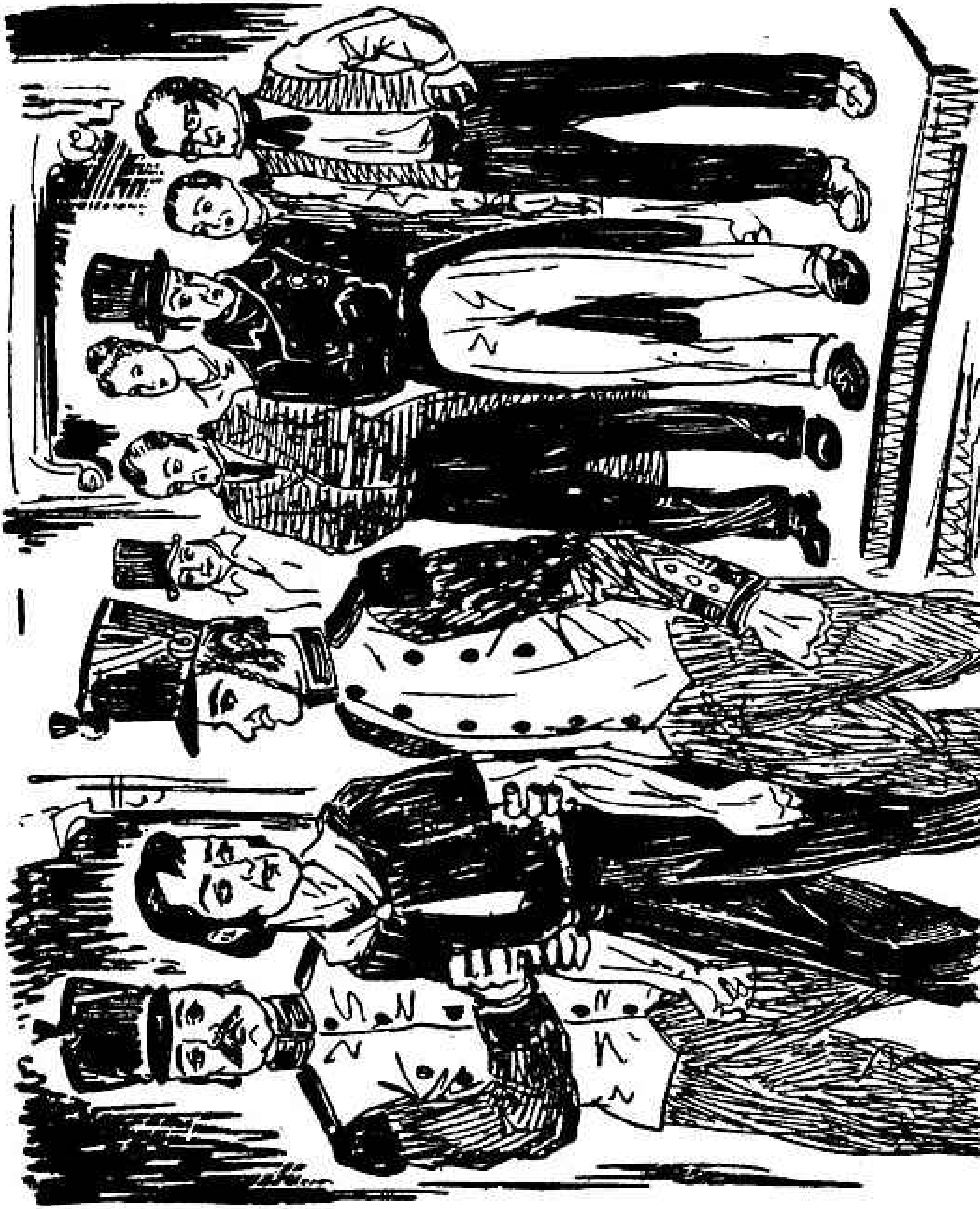
यह देखकर सभी लोग चौंक पड़े। मेहमानों में घबराहट फैल गई। लोगों की समझ में नहीं आया कि यह सब क्या हो रहा है। जो लोग खा-पीकर आनन्द मनाने में लगे हुए थे उनकी सारी हंसी गायब हो गई और डर के मारे उनका दिल धड़कने लगा। वहां एकदम सन्नाटा छा गया।

दारोगा ने ज़रा कड़कती हुई आवाज़ में पूछा, 'एडमण्ड दान्ते किसका नाम है?'

अपना नाम सुनकर एडमण्ड का चेहरा उतर गया, लेकिन किसी तरह अपने-आप पर काबू पाकर वह आगे आया और बोला, 'एडमण्ड मेरा नाम है।'

दारोग़ा आगे बढ़कर बोला, 'तुम्हें हमारे साथ चलना होगा।'

एडमण्ड यह सुनकर सन्न रह गया। उसके पैर लड़खड़ा गए। उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। दूसरे लोग भी मारे घबराहट के कुछ बोल न सके। एडमण्ड ने कांपती हुई



आवाज़ में कहा, 'आप लोग मुझे गिरफ्तार करने आए हैं? लेकिन ऐसा लगता है कि शायद आप लोग गलती कर रहे हैं, क्योंकि मैंने तो ऐसा कोई काम नहीं किया जिसके लिए मुझे गिरफ्तार होना पड़े...'

दारोगा बोला, 'तुम मस्यू मोरेल के जहाज़ में काम करते हो न? तुम्हीं तो 'फराओ' नामक जहाज़ पर तैनात हो?'

एडमण्ड बेचारा चुप रह गया। उसने एक-आध बार और विरोध करने की कोशिश की, लेकिन दारोगा टस से मस होने को तैयार न था। एडमण्ड अपने पिता और मर्सीदिस तथा अपने मालिक मोरेल की ओर घूमकर बोला, 'ज़रूर इन लोगों से कोई गलती हो रही है। लेकिन ये पुलिसवाले हैं, भला मेरी बात क्यों मानेंगे! मैं ज़रा इनके साथ थाने तक हो आऊं। मैंने कोई-अपराध तो किया नहीं है, भला फिर क्यों मुझे गिरफ्तार किया जाएगा? थाने में सब तय हो जाएगा। आप लोग कोई चिन्ता न करें। मैं अभी आ रहा हूं।' फिर वह मर्सीदिस का हाथ दबाकर बोला, 'घबराओ मत, मुझे कुछ नहीं होगा।' यह कहकर वह सिपाहियों के साथ वहां से चल पड़ा।

रंग में भंग पड़ गया। सारी हंसी-खुशी पर पानी फिर गया। लोगों के चेहरे उतर गए। धीरे-धीरे वहां से भीड़ छंटने लगी। जो लोग बच गए, वे एक-दूसरे की ओर उदास नज़रों से देखते हुए वहीं बैठे रहे। मोरेल सबको हिम्मत बंधाने की कोशिश करता रहा। वह कह रहा था, 'घबराने की ज़रूरत नहीं है। पुलिसवालों से ज़रूर कोई गलती हुई है। आप लोग यहीं रहिए। मैं ज़रा एडमण्ड को छुड़ाने की कोशित करता हूं। कोतवाल से मेरी जान-पहचान है।'

यह कहकर मोरेल वहां से चला गया। मेहमान लोग बैठकर इन्तज़ार करने लगे। एक घंटा बीता, दूसरा बीता, लेकिन न तो मोरेल ही लौटा और न एडमण्ड ही। इसलिए धीरे-धीरे बाकी बचे हुए लोग भी जाने लगे। सिर्फ एडमण्ड का पिता और

मर्सीदिस बचे और अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहाते रहे।

फर्नान्द पहले से ही इस काम को करने से घबरा रहा था। फिर किसी तरह जोश में आकर उसने चिट्ठी डाल दी थी। लेकिन वह नहीं जानता था कि उसकी शरारत का इतना बुरा नतीजा निकल सकता है। वह यह सब नहीं देख सका और चुपचाप वहां से खिसक गया। लेकिन डैंग्लर्स मन ही मन प्रसन्न हुआ। वह वहां बैठा रहा। थोड़ी देर में केडरोसी नामक एक जहाजी उसके पास आया और बोला, 'यह सब तुम्हारी शरारत है। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि इसके पीछे तुम्हीं हो। उस दिन शराबखाने में तुमने फर्नान्द से जो कुछ कहा था, वह सब मैंने सुन लिया था। मैं वहीं एक कोने में बैठा था। तुम्हें ऐसा काम नहीं कर चाहिए था।'

डैंग्लर्स पहले तो घबराया कि उसका भेद उस आदमी को कैसे मालूम हो गया; लेकिन उसने सोचा कि जब इसे मालूम हो ही गया है तो इससे ज़रा ढंग से पेश आना चाहिए। वह बोला, 'जानते हो तो क्या हुआ! जब तुम उस समय नहीं बोले, तो इस समय बीच में क्यों पड़ते हो? जाओ, अपना काम देखो! तुम्हारे इस तरह चीखने-चिल्लाने से हो सकता है, मैं भी पकड़ा जाऊं और तुम भी बच नहीं सकोगे। सब लोग यही मानेंगे कि तुम्हारा भी षड्यन्त्र में हाथ है।'

केडरोसी ज़रा डरपोक स्वभाव का था। वह डैंग्लर्स की बात सुनकर डर गया और चुप्पी मार गया। उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि सबको बतला दे कि षड्यन्त्र के पीछे किसका हाथ है।

उधर सिपाहियों ने एडमण्ड को शहर के मेयर के सामने पेश किया। मेयर ने उससे तरह-तरह के सवाल पूछने शुरू किए। लेकिन इसी बीच एक सिपाही ने जहाज़ में एडमण्ड के कमरे से मिले एक कागज़ को उनके हाथ में रख दिया। कागज़ को देखते ही वे चौंक उठे, क्योंकि कागज़ जिसके पास जाने

वाला था, और जिसका नाम उस पर लिखा हुआ था, वह और कोई नहीं, मेयर मि० विलफोर्ट के अपने ही पिता थे। उन्हीं का नाम मस्यू नोर्तिये था।

देखते-देखते मेयर के माथे पर पसीना झलक आया। उन्हें मालूम था कि उनके पिता नेपोलियन के पक्ष में हैं और राजा को नहीं चाहते हैं, लेकिन उन्होंने यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि उनके पिता और नेपोलियन के बीच गुप्त पत्र-व्यवहार चलता है। वे जानते थे कि अगर इस चिट्ठी की बात मालूम हुई और सारा भेद खुला तो न सिर्फ उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा, बल्कि उन्हें मौत की सजा भी हो सकती है और पिता की हालत क्या होगी, यह तो साफ जाहिर है। उनके बचने की तो उम्मीद ही नजर नहीं आ रही थी।

खूब सोच-विचारकर उन्होंने एक उपाय ढूंढ निकाला। उन्होंने सब लोगों को वहां से बाहर जाने को कहा, और फिर एडमण्ड को अपने पास बुलाकर पूछा, 'एडमण्ड, तुम्हें यह कागज कहां से मिला? डरो मत, मुझे साफ-साफ बताओ।'

एडमण्ड बड़ा भोला आदमी था। उसने मेयर की बात पर विश्वास कर लिया और उसे सब कुछ बता दिया। उसने यह भी बताया कि किस तरह कप्तान ने मरते समय उसे यह काम सौंपा था।

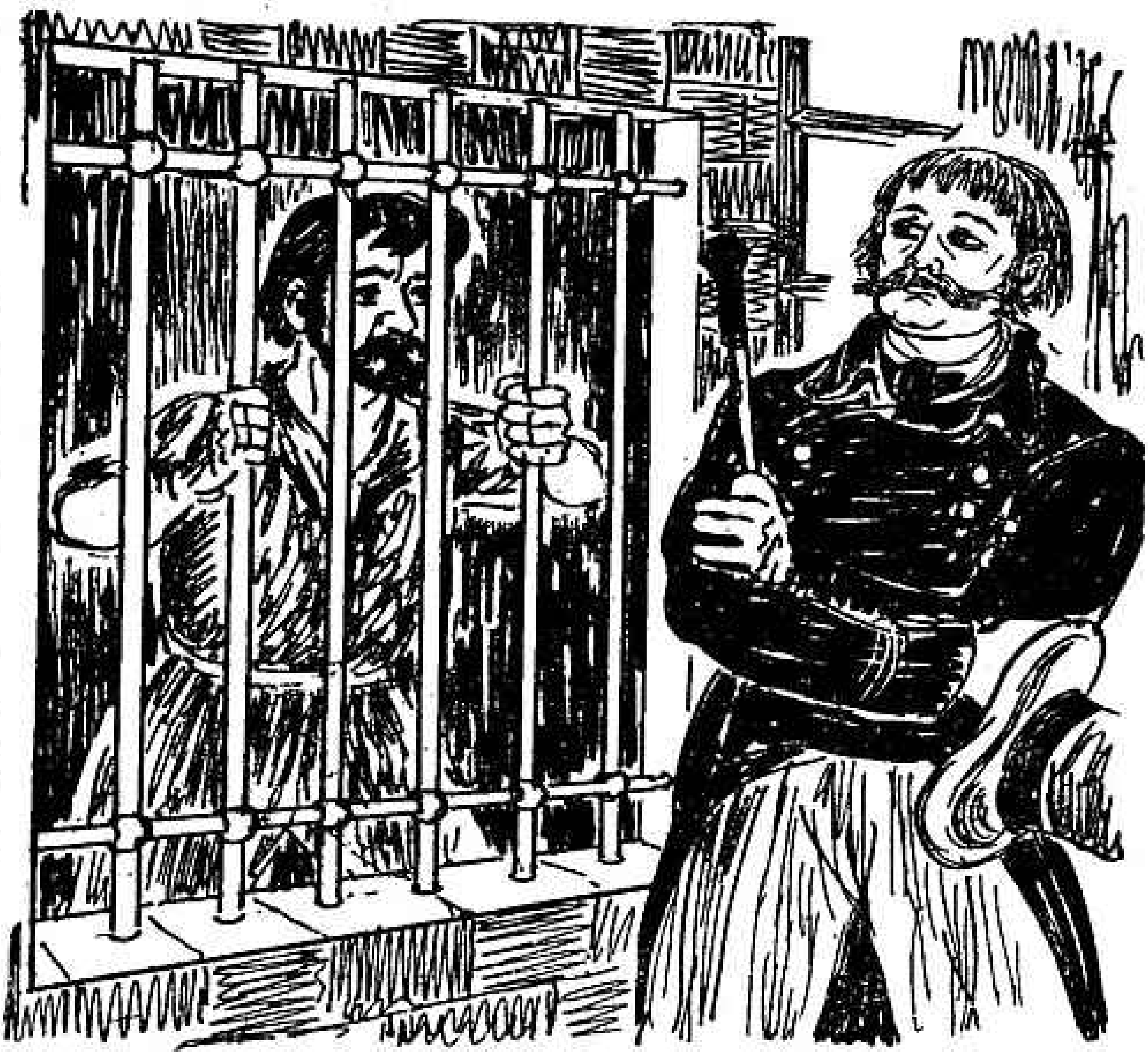
सब सुनकर मेयर ने उससे पूछा, 'अच्छा, अब जरा यह बताओ कि इस कागज पर जिसका पता लिखा है उसे तुम जानते हो?'

'नहीं, मैं नहीं जानता।'

'कभी तुमने उसका नाम सुना है?'

'नहीं।'

यह सुनकर मेयर ने शांति की सांस ली। उसने अपने मन की बात मन में रखी और कहा, 'एडमण्ड, तुम्हें यह मालूम है कि अगर किसी को भी इस चिट्ठी के तुम्हारे पास होने की खबर



मिली तो तुम गिरफ्तार किए जा सकते हो और तुम्हें कड़ी से कड़ी सजा मिल सकती है ? इस चिट्ठी को अपने पास रखना राजद्रोह है। इस अपराध की सज़ा में तुम्हें फांसी तक दी जा सकती है।'

यह सुनकर एडमण्ड का चेहरा फक पड़ गया। वह बोला, 'लेकिन हुज़ूर, मुझे तो कुछ पता नहीं। मैं बिलकुल निर्दोष हूं।'

मेयर ने बहुत गम्भीर चेहरा बनाकर कहा, ठीक है, मैं तुम्हारी बात समझ रहा हूं, लेकिन भला दूसरे यह सब कैसे समझेंगे ? चिट्ठी तुम्हारे पास मिली और तुम्हें इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है, भला इस पर कौन विश्वास करेगा ?'

एडमण्ड हाथ जोड़कर बोला, 'नहीं नहीं, मेरी बात पर विश्वास कीजिए। ईश्वर जानता है, मैं जो कुछ कह रहा हूं, सच कह रहा हूं। मैं बिलकुल निर्दोष हूं। जैसे भी हो। आप मेरी रक्षा कीजिए।'

मेयर ने उसे हिम्मत बंधाते हुए कहा, 'मामला तो बड़ा संगीन है। फिर भी, देखो, मैं कोशिश करूंगा। लेकिन इतना याद रखना कि किसी को इस चिट्ठी की बात मालूम न हो, और यह तो मालूम ही नहीं होना चाहिए कि यह चिट्ठी किसके नाम है, वरना मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकूंगा।'

यह सुनकर एडमण्ड की जान में जान आई। वह गिड़गिड़ा-कर बोला,'हुज़ूर, किसी तरह मुझे बचा लीजिए। मैं ज़िन्दगी-भर आपका गुलाम रहूंगा। मैं किसी से भी नहीं कहूंगा कि यह चिट्ठी कैसी है और किसके नाम है। मेरी जान अब आपके हाथ में है मुझे पूरी उम्मीद है कि आप मेरी मदद ज़रूर करेंगे।'

मेयर ने गम्भीर स्वर में कहा, 'मुझसे जो कुछ हो सकेगा, मैं करूंगा। यह चिट्ठी तुम्हारे खिलाफ सबूत की तरह पेश की जा सकती है। इसे मैं तुम्हारे सामने ही नष्ट किए देता हूं।' यह कह कर उन्होंने उसके सामने ही उस कागज़ के टुकड़े-टुकड़े कर उसे जला डाला। एडमण्ड यह जान ही नहीं सका कि मेयर ने उसे बचाने के लिए नहीं, बल्कि खुद अपने-आपको और अपने पिता को बचाने के लिए कागज़ को नष्ट किया है।

कुछ सोचकर उन्होंने कहा, 'तुम्हें कुछ दिनों तक जेल में रहना पड़ेगा। उसके बाद तुमको छोड़ दिया जाएगा।'

एडमण्ड ने मेयर को धन्यवाद दिया और फिर वह सिपाहियों के साथ चला गया। उसके मालिक मस्यू मोरेल अदालत में

बाहर बैठे थे। मेयर ने उससे कहा, 'मामला बड़ा संगीन है, लेकिन मैं भरसक अपनी कोशिश करूंगा कि यह लड़का छोड़ दिया जाए। अब आप जाइए, किसी तरह इसके माता-पिता को समझाने की कोशिश कीजिए।'

मस्यू मोरेल निराश होकर घर लौट आए और एडमण्ड के पिता और मर्सीदिस को समझाने की कोशिश करने लगे।



3

एडमण्ड मेयर की बात पर विश्वास करके छूटने की उम्मीद में किसी तरह जेल में दिन काटने लगा। उसने किसी को यह नहीं बताया कि उसे क्यों पकड़ा गया है, उसके पास किसके नाम चिट्ठी थी, या उसमें क्या लिखा था। उसे मेयर पर पूर भरोसा था और उसने उनको वचन दिया था कि वह किसी को उस चिट्ठी के बारे में नहीं बताएगा।

इसी तरह कई दिन बीत गए। एक दिन एडमण्ड अपनी कोठरी में कुछ उदास होकर बैठा था कि इतने में अचानक उसके पास कुछ सिपाहियों ने आकर कहा, 'चलो, हमारे साथ चलो।'

एडमण्ड को कुछ आशा भी हुई, लेकिन साथ ही वह कुछ घबराया भी। उसने पूछा, 'कहां?'

सिपाहियों ने डांटकर कहा, 'बहस न करो, चुपचाप चले चलो। थोड़ी देर में ही मालूम हो जाएगा कि कहां जाना है।'

एडमण्ड कुछ नहीं बोला। उसे मेयर की बात पर विश्वास था। उसने सोचा कि शायद उसे जेलखाने से रिहा किया जा रहा है। वह उठा और उनके साथ चला गया।

चलते-चलते वे लोग समुद्र के किनारे जा पहुंचे। वहां पहुंचने पर सिपाहियों ने उसको एक नाव में बैठने को कहा। उसने आश्चर्य से पूछा, 'क्यों, हम लोग कहां जा रहे हैं?'

इसके जवाब में एक सिपाही ने उसे डांटते हुए कहा, 'चुप रहो, बेकार सवाल-जवाब न करो। अभी थोड़ी देर में मालूम हुआ जाता है कि हम लोग कहां जा रहे हैं!'

नाव चल पड़ी। एडमण्ड को अब भी आशा थी कि मेयर

साहब उसकी मदद कर रहे हैं और उसे चुपचाप जेल से रिहा कराकर फ्रांस की सीमा के बाहर कहीं छुड़वा देना चाहते हैं। इसलिए वह समुद्र का दृश्य देखता हुआ चुपचाप बैठा रहा। लेकिन कुछ दूर जाने पर एक पहाड़ी की चोटी पर किसी बड़ी भारी किले जैसी चीज़ को देखकर उसका दिल धड़कने लगा। एक अज्ञात आशंका से वह कांपने लगा। उसने डरते-डरते पूछा, 'वह कौन-सी जगह है ?'

एक सिपाही ने जवाब दिया, 'वहीं तुम्हें जाना है। बहुत देर से तुम यह जानने के लिए उतावले थे न, अब अच्छी तरह देख लो। यह फ्रांस का सबसे भयानक जेलखाना है !'

यह सुनकर तो जैसे उसके होश उड़ गए। कहां तो वह यह सोच बैठा था कि मेयर साहब उसको रिहा करवा रहे हैं और कहां यह चारों तरफ समुद्र से घिरा पहाड़ी जेलखाना ! वह बोला, 'ज़रूर तुम लोगों से कोई गलती हुई है। मुझे तो शीघ्र ही छोड़ा जानेवाला था। मुझे वहां क्यों भेजा जा रहा है ? मैं निर्दोष हूं।'

इस पर सभी सिपाही खिलखिलाकर हंस पड़े और बोले, 'बड़े चालाक मालूम पड़ते हो। हमको भी पट्टी पढ़ाना चाहते हो ! चुपचाप बैठे रहो !'

धीरे-धीरे किला पास आया। उसकी पत्थर की काली-काली दीवारें देखकर एडमण्ड का दिल दहल गया। उसे किले की ओर ले जाया जा रहा था, लेकिन फिर भी वह मन ही मन यही सोच रहा था कि ज़रूर इन लोगों से कोई गलती हुई है, वरना भगवान के राज्य में इतना बड़ा अन्धेर नहीं हो सकता ! उसने सिपाहियों से हाथ जोड़कर और गिड़गिड़ाकर कहा, 'एक बार मुझे मेयर साहब के पास ले चलो, वे मुझे छोड़ देंगे !'

लेकिन सिपाहियों ने उसकी एक न सुनी पहले तो वे लोग उसका मज़ाक बनाते रहे, क्योंकि उनके हाथ में कुछ नहीं था, उन्हें जो हुक्म मिला था, उसी को वे पूरा कर रहे थे। जब एडमण्ड

ज़्यादा विरोध करने लगा तो सिपाहियों ने भी बल का प्रयोग किया और ज़बरदस्ती खींचते हुए उसे किले में ले गए। एडमण्ड विरोध करता रहा और किले के बड़े-बड़े दरवाज़े बन्द हो गए।

बेचारा एडमण्ड ! अभी तो सिर्फ अठारह-उन्नीस साल की उसकी उम्र थी। अभी-अभी वह काम लायक हुआ था। उत्साह और ईमानदारी से काम करके उसने मालिक को प्रसन्न कर लिया था। मर्सीदिस जैसी लड़की से उसका विवाह होनेवाला था और इसी बीच उसे दुनिया से दूर इस भयानक किले में बन्द कर दिया गया, जिसके चारों तरफ पानी था। किले में एडमण्ड को एक छोटी-सी अंधेरी कोठरी में रखा गया। इस कोठरी में दीवार में ऊपर की तरफ सिर्फ एक छोटा-सा छेद था। उसी से थोड़ी-बहुत हवा आ सकती थी।

यह कोठरी शायद तहखाने में थी। इसीलिए आस-पास के किसी आदमी की झलक तक नहीं मिलती थी। सिर्फ शाम-सुबह पहरेदार आते थे और उसके आगे खाना सरकाकर चले जाते थे वह पहरेदारों के आगे हाथ-पैर जोड़ता और अपने को कोतवाल के पास पहुंचा देने की मांग करता। कभी वह उनसे चिट्ठी लिखने की इजाज़त मांगता। लेकिन वहां कोई उसकी सुनने वाला नहीं था।

इसी तरह दिन पर दिन बीतने लगे। किसी ने उसकी खबर नहीं ली। उस बेचारे को यह भी पता नहीं था कि कितने दिनों तक उसे इस कालकोठरी में सड़ना पड़ेगा। सारी आरज़ू-मिन्नत बेकार गई। उसने पहरेदारों से प्रार्थना की कि और कुछ नहीं तो उसे ज़रा जेलर से ही मिला दिया जाए, लेकिन इसके जवाब में उसे बताया गया कि जेलर किसी से मुलाकात नहीं करते।

चारों तरह से निराश होकर वह तो जैसे पागल हो गया। अन्त में उसने पहरेदारों को धमकाना शुरू किया कि अगर जेलर से नहीं मिलाया गया तो वह उनमें से जिसको पकड़ पाएगा उसका गला घोंट देगा। उसने सोचा था कि शायद इससे डरक

पहरेदार उसे जेलर के पास पहुंचाने को राज़ी हो जाएंगे, लेकिन उसका उल्टा ही परिणाम निकला। उसे तहखाने की एक और अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया गया। पहले वाली कोठरी में तो थोड़ा-सा छेद था जिससे ताज़ी हवा आती थी और कभी-कभी सूरज की एकाध किरण भी, लेकिन यहां तो बिलकुल अंधेरा ही अंधेरा था। वह बहुत रोया-चिल्लाया, किसी ने उसकी एक न सुनी।

उधर मस्यू मोरेल रोज़ मेयर के पास जाते थे और उससे एडमण्ड के समाचार मालूम करते थे। शुरू में तो मेयर उन्हें मीठे-मीठे शब्दों में आश्वासन देता रहा, लेकिन बाद में उसने मोरेल से मिलना ही बन्द कर दिया। एडमण्ड के बूढ़े बाप और असहाय मर्सीदिस की स्थिति देखकर मोरेल ने बड़ी कोशिश की, लेकिन कोई फल नहीं निकला।



4

इधर नेपोलियन मौके की तलाश में था और फिर से राज्य प्राप्त करने की कोशिश में लगा था। मौका पाते ही उसने एक बड़ी भारी फौज बटोरी और फिर फ्रांस पर हमला कर दिया। पूरे फ्रांस में भगदड़ मच गई। बूढ़े राजा अठारहवें लुई ने एक फौज नेपोलियन को रोकने के लिए भेजी, लेकिन उलटे वह फौज पूरी की पूरी नेपोलियन से जा मिली। धीरे-धीरे पूरी तैयारी करके नेपोलियन ने फ्रांस की राजधानी पेरिस पर हमला करने की योजना बनाई।

इस मौके पर पुराने कैदियों के छोड़े जाने की आशा थी। मोरेल बराबर इस कोशिश में लगा था कि मेयर को समझा-बुझाकर एडमण्ड को छोड़ने के लिए राजी कर लिया जाए। लेकिन मेयर बड़ा डरपोक था। वह सोचता था कि अगर कहीं नेपोलियन हार गया और राजा का ही शासन रहा तो एडमण्ड को छोड़ना ठीक नहीं रहेगा। यहां तक की राजधानी में नेपोलियन की सेनाएं घुस आईं और नेपोलियन ने सिंहासन पर कब्ज़ा कर लिया। अब वह सम्राट बन गया, लेकिन फिर भी मेयर एडमण्ड को छोड़ने की हिम्मत नहीं कर सका। वह जानता था कि नेपोलियन का राज्य ज़्यादा दिन टिक नहीं सकेगा। और हुआ भी यही। करीब सौ दिन तक राज्य करने के बाद नेपोलियन को वाटरलू के मैदान में हारना पड़ा और अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा।

नेपोलियन के हारने के साथ ही एडमण्ड के छूटने की आशा भी जाती रही। नेपोलियन के खिलाफ राजा लुई की मदद करने के कारण मेयर विलफोर्ट का पद बढ़ा और अब पहले से

ज्यादा शक्तिशाली हो गया। अब वह चाहता तो एडमण्ड को छोड़ सकता था। इसके अलावा एडमण्ड मेयर के पिता का नाम भी न जानता था और न ही उसे यह पता था कि वह राजा के खिलाफ-षड्यन्त्र में नेपोलियन से मिला हुआ है। लेकिन इतने पर भी मेयर एडमण्ड को छोड़ने के लिए राजी नहीं हुआ। उसे अब भी डर था कि कहीं एडमण्ड छूटकर अधिकारियों को यह न बता दे कि मेयर का पिता राजा के खिलाफ षड्यन्त्र में भाग लिया करता था।

इस तरह बेचारा एडमण्ड जेल में सड़ता रहा। उसी अंधेरी कोठरी के पत्थरों पर सिर पटक-पटककर वह रोता रहा, लेकिन किसी ने उसकी मदद नहीं की। शुरू के दो-तीन साल तक वह इसी उम्मीद में बैठा रहा कि शायद उसे छोड़ दिया जाए, लेकिन अब वह सारी उम्मीद छोड़ चुका था। अब तो उसे यही विश्वास हो गया था कि सिवा मौत के और कोई उसे इस कालकोठरी से छुटकारा नहीं दिला सकता।

कुछ समय बाद एक सरकारी अधिकारी एक दिन किले के कैदियों की हालत की जांच करने के लिए आया। किले के ऊपरी हिस्से के सारे कैदियों को देखने के बाद उसने पहरेदारों से पूछा, 'तहखाने में कितने कैदियों को बन्द किया है?'

पहरेदारों ने उसे बताया, 'नीचे सिर्फ दो कैदी बन्द हैं। उनमें से एक तो विद्रोह करने के अपराध में बन्द किया गया है और दूसरा बिलकुल मूर्ख है, वह पागल मालूम होता है।'

अधिकारी को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, "अच्छा, लेकिन ये लोग हैं कौन?"

पहरेदार के कप्तान ने बताया, उनमें से एक तो नेपोलियन को फिर से राजगद्दी पर बैठाने के षड्यन्त्र में पकड़ा गया था। उसकी उम्र बहुत कम है। लेकिन वह बड़ा खतरनाक आदमी मालूम पड़ता है और दूसरा एक बूढ़ा पादरी है। वह भी शायद ऐसे ही किसी अपराध में पकड़ा गया था, लेकिन वह

बिलकुल पागल मालूम होता है। वैसे तो वह बड़े शान्त स्वभाव का है, लेकिन कभी-कभी उसका दिमाग खराब हो जाता है और वह जेल में पड़ा-पड़ा लाखों रुपये की सम्पत्ति का सपना देखता रहता है। जो कोई उसके पास जाता है, वह उससे कहता है कि 'मुझे यहां से छुड़वा दो तो मैं तुम्हें बहुत सारा रुपया दूंगा।'

अधिकारी उन दोनों से मिलने के लिए तहखाने में उतरा। पहले उसने एडमण्ड से बातचीत की। एडमण्ड ने उसे बताया, 'मुझे कुछ नहीं मालूम कि मुझे यहां किसलिए बन्द करके रखा गया है। मुझे अगर मेयर साहब से मिला दिया जाए तो मैं उनको उनका पुराना वादा याद दिलाकर उनसे कहूंगा कि मुझे यहां से छुड़वा दिया जाए। और मुझे पूरा विश्वास है कि वे जरूर मुझे यहां से छुड़वा लेंगे।'

अधिकारी ने उससे हमदर्दी प्रकट की और कहा, 'तुम्हारे चेहरे से ऐसा नहीं लगता कि तुम खतरनाक आदमी हो। खैर, मुझसे जो कुछ बन पड़ेगा, मैं करूंगा।'

फिर वह उस पागल पादरी से मिलने गया। पादरी ने उसे बताया, 'मेरा नाम फादर फारिया है। मैं बीस साल तक एक राजकुमार के यहां नौकरी करता था। लेकिन पता नहीं क्यों, पांच साल पहले मुझे पकड़कर यहां बन्द कर दिया गया। अगर आप मुझे यहां से छुड़वा दें तो मैं आपको बहुत-सा रुपया दिला सकता हूं।'

पहरेदारों ने पहले से ही उस अधिकारी को पादरी का किस्सा बता दिया था और कह दिया था कि वह रुपये देने की बात करता है। इसलिए उसने पादरी की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और व्यंग्य से मुस्कराता हुआ वहां से ऊपर लौट आया।

रास्ते में एक सिपाही ने उससे कहा, 'हुजूर, इस आदमी का दिमाग खराब हो गया है, वरना जितने रुपये की यह बात करता



है, उसका अगर एक चौथाई भी इसके पास होता तो आज इस तरह जेल में न सड़ता !'

अधिकारी बोला, 'हां, तुम्हारा कहना सही मालूम होता है।' फिर उसने जेलखाने के दफ्तर में जाकर सब कैदियों के कागजात देखे। कागजों में साफ-साफ यह लिखा था कि एडमण्ड

को छोड़ना खतरे से खाली नहीं है। इसलिए वह कुछ नहीं कर सका और चुपचाप वहां से लौट आया।

बेचारा एडमण्ड ! वह तो अब पूरी उम्मीद ही खो बैठा कि कभी वह जेल के बाहर भी निकल सकेगा या नहीं। सब तरफ से हारकर उसने अपने आपको ईश्वर के भरोसे छोड़ दिया।

एडमण्ड के मालिक भी अब उसके रिहा होने की उम्मीद खो बैठे थे। उन्होंने डैंग्लर्स को एक जहाज़ का कप्तान बना दिया। इस तरह इतने दिनों बाद डैंग्लर्स की इच्छा पूरी हुई।



5

एडमण्ड को कोई आशा नज़र नहीं आती थी, लेकिन फिर भी वह उम्मीद लगाए था कि किसी न किसी तरह इस काल-कोठरी से उसे मुक्ति मिल जाएगी। दिन पर दिन बीतते जाते थे। ऐसा लगता था, जैसे भाग्य ही उससे रूठ गया था। इतने दिनों से उसने किसी इन्सान का चेहरा तक नहीं देखा था। सिर्फ सवेरे पहरेदार आता था और दरवाज़े के नीचे से उसके लिए खाना खिसका देता था। बस, इसके बाद दिनभर वहाँ सन्नाटा छाया रहता; मनुष्य या चिड़िया की बोली तक नहीं सुनाई देती।

कभी-कभी वह सोचता था कि ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है, और कभी सोचता था कि जो भाग्य में लिखा होता है वह तो होकर ही रहता है। लेकिन जब उसे मर्सीदिस या अपने बूढ़े पिता की याद आती थी, तब वह बहुत बेचैन हो उठता था और पागल की तरह अपनी कोठरी का दरवाज़ा पीटने लगता था और फिर हारकर चुपचाप एक कोने में पड़ रहता था।

धीरे-धीरे ईश्वर पर से भी उसकी श्रद्धा उठने लगी। वह सारी आशा खो चुका था। अब उसे मालूम हो गया था कि यहाँ से वह कभी नहीं निकल सकेगा। घोर निराशा में उसने अपने प्राण छोड़ देने का निश्चय किया। लेकिन उस कोठरी में कोई ऐसी चीज नहीं थी जिससे वह आत्महत्या कर पाता। बहुत सोचने पर उसने यह तय किया कि खाना-पीना बिलकुल बन्द कर दिया जाए। दूसरे दिन सवेरे जब पहरेदार उसके लिए खाना लेकर गया तो उसने उसे छुआ तक नहीं। दिन भर

दीवार की ओर मुंह किए चुपचाप पड़ा रहा। इसी तरह दिन बीतने लगे। रोज़ खाना आता था और कोठरी के दरवाज़े पर पड़ा रहता था, लेकिन एडमण्ड उसे छूता तक नहीं था। पहरेदार यह सोचता था कि शायद कैदी बीमार है, इसीलिए खाना नहीं खा रहा है। वह बिना बोले रोज बचा हुआ खाना हटा लेता था और ताज़ा खाना रख देता था।

भूखा रहने के कारण एडमण्ड कुछ बीमार-सा रहने लगा। वह बहुत अधिक कमज़ोर हो गया और उसकी रही-सही शक्ति भी जाती रही। उस अंधेरी कोठरी में, जहां न धूप जाती थी न हवा, कोई भी आदमी थोड़े ही दिनों में बीमार पड़ सकता था। इसलिए तबीयत तो उसकी पहले से ही खराब रहती थी, लेकिन खाना न खाने के कारण तो उसकी हालत ऐसी हो गई, जैसे वह बरसों से बीमार हो। वह सोचता था कि चलो अच्छा है, इसी तरह एक दिन जान निकल जाएगी और इस नरक की ज़िन्दगी से मुझे छुट्टी मिल जाएगी।

लेकिन वह मर नहीं सका। इस बीच एक विचित्र घटना घटी, जिससे उसे आशा की एक नई किरण दिखाई दी। हुआ यह कि वह पड़ा-पड़ा मौत का इन्तज़ार कर रहा था। इतने में एक दिन उसे कोई आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लगता था, जैसे बगल की दीवार के पास कोई ज़मीन खोद रहा है।

पहले तो उसने सोचा कि शायद कोई चूहा बिल खोद रहा है, लेकिन जब उसने दीवार से कान लगाकर ध्यान से सुना तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। सचमुच ही पास की कोठरी में कोई गडढा खोद रहा था। उसने सोचा कि हो सकता है, उसका पड़ोसी जेल से छूटने की कोई तरकीब निकाल रहा हो। यह सोचकर एडमण्ड को भी कुछ आशा बंधी और उसने पहरेदार द्वारा रखे गए खाने में से रोटी का एक टुकड़ा मुंह में रख लिया और थोड़ा पानी भी पी लिया। पेट में अन्न के जाते ही उसमें कुछ शक्ति आई। उसने दीवार पर तीन बार चोट की और फौरन

उधर से आवाज़ आनी बन्द हो गई। अब एडमण्ड को विश्वास हो गया कि सचमुच कोई क़ैदी दीवार तोड़कर इधर आने की कोशिश कर रहा है।

लेकिन फिर भी तीन दिन तक कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी। एडमण्ड को फिर से निराशा ने आ घेरा। वह दिन रात दीवार पर कान लगाए उस आवाज़ की प्रतीक्षा करता रहता था। अन्त में चौथे दिन फिर आवाज़ आने लगी। एडमण्ड खुशी से नाच उठा। उसने सोचा कि मुझे भी इस काम में अपने साथी की मदद करनी चाहिए। लेकिन ज़मीन खोदी जाए तो किस चीज़ से ? वहां कोई साधन तो था नहीं। अन्त में उसे एक तरकीब सूझ गई। जिस तसले में उसे खाना दिया जाता था उसी से उसने दीवार के पास ज़मीन खोदना शुरू किया। जैसे ही पहरेदार के पैरों की आहट आई, उसने काम बन्द कर दिया। जब पहरेदार खाना रखकर लौट गया तो खा-पीकर वह फिर से अपने काम में जुट गया।

थोड़ी ही देर में उसने काफी ज़मीन खोद डाली और फिर धीरे-धीरे दीवार का एक पत्थर भी निकाल लिया। जब पत्थर निकल आया तो एडमण्ड की खुशी की सीमा नहीं रही। उसे यह सोचकर बड़ा अफसोस हुआ कि इतने दिनों तक मैं क्यों चुप बैठा रहा। अन्त में कुछ दिनों में उसने दीवार में छेद कर दिया। जब छेद बड़ा हो गया तो उसने उसमें से धीरे से अपने पड़ोसी को आवाज़ दी और उससे पूछा, 'तुम कौन हो, भाई ?'

उधर से आवाज़ आई, 'तुम कौन हो ?'

एडमण्ड ने जवाब दिया, 'मैं एक क़ैदी हूं।'

'किस देश के रहने वाले हो ?'

'फ्रांस का।'

'तुमने क्या किया था ? यहां तुम्हें किसलिए बन्द किया गया है ?'

'मैंने किया तो कुछ नहीं था, मैं बिलकुल निर्दोष हूं।'

उसका पड़ोसी यह सुनकर हंस पड़ा और बोला, 'बिलकुल निर्दोष ? तब क्या बिना किसी अपराध के तुमको यहाँ बन्द किया गया है ?'

'हाँ, मैं यही जानता हूं। हालाँकि मुझ पर यह इल्ज़ाम लगाया गया है कि सम्राट नेपोलियन को फिर से राज्य दिलाने के षड्यन्त्र में भाग लेता हूं।'

उसके साथी ने आश्चर्य से पूछा, 'क्या कहा ? क्या सम्राट नेपोलियन अब राज्य नहीं करते ?'

यह प्रश्न सुनकर एडमण्ड को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, 'नहीं तो ! वे तो राज्य छोड़कर एल्बो द्वीप में चले गए हैं ! क्या तुम्हें यह नहीं मालूम ?'

उसके साथी ने निराशा के स्वर में कहा, 'नहीं भाई, भला मुझे कहाँ से मालूम हो सकता है ? मैं तो जिस दिन से इस कैदखाने में बन्द हुआ हूं, बाहर की मुझे कोई खबर ही नहीं मिली !'

एडमण्ड ने पूछा, तुम कब से यहाँ बन्द हो ?'

'कई साल हो गए। अब तो मैं गिनती भी भूल चुका हूं। लेकिन इतना मुझे याद है कि जब मैं यहाँ लाया गया था तब अठारह सौ ग्यारह का साल चल रहा था।'

यह सुनकर एडमण्ड काँप उठा। उससे भी चार वर्ष पहले उस बेचारे को यहाँ बन्द किया गया था। इतने में उधर से आवाज़ आई, 'अच्छा, यह तो बताओ, तुम जहाँ खोद रहे हो वह जगह ज़मीन से कितनी ऊंची है ? और तुम्हारी कोठरी के आगे क्या है ?'

एडमण्ड बोला, 'मैं बिलकुल ज़मीन के पास खोद रहा हूं।'

'तुम्हारी कोठरी के बाहर क्या है ?'

'मेरी कोठरी के बाहर तो कुछ भी नहीं है। शायद ऊपर जाने की सीढ़ी है।'

'ओह, सारी मेहनत बेकार गई। मैंने तुम्हारी दीवार को बाहर की दीवार समझा था। मैं कोठरी खोलकर बाहर निकलना

चाहता था । मुझे क्या पता था कि एक कोठरी से निकलकर मैं दूसरी कोठरी में जाने की कोशिश कर रहा हूं । कितना अच्छा होता, अगर मैं बाहर की तरफ वाली दीवार में छेद करता ।'

एडमण्ड बोला, 'लेकिन बाहर तो समुद्र है । यहां से ज़मीन बहुत दूर है । क्या इतनी दूर तुम तैर सकते हो ?'

'ऐसे मौके पर भगवान शरीर में ताकत दे देता है । लेकिन अब क्या किया जाए ? खैर, कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही होगा । अच्छा, अब तुम कुछ न करना । जब तक फिर दूसरी बार मेरे साथ बातचीत न हो तब तक तुम चुपचाप पड़े रहना ।

'लेकिन तुमने बताया नहीं कि तुम कौन हो ।'

उसके पड़ोसी ने एक क्षण रुककर कहा, 'मैं सत्ताईस नम्बर का कैदी हूं ।'

एडमण्ड बोला, ' क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं ? तुम इस तरह अपने को छिपाने की कोशिश क्यों कर रहे हो ?'

इसके जवाब में उसका पड़ोसी व्यंग्य से हंस पड़ा और कुछ नहीं बोला ।

एडमण्ड ने गम्भीर आवाज़ में धीरे से कहा, 'देखो भाई, मैं एक ईसाई हूं और भगवान ईसा की कसम खाकर कहता हूं कि मैं जेल के पहरेदारों से इस बारे में कुछ नहीं कहूंगा । लेकिन मुझे भी अपने साथ लेते चलो । अगर तुम्हें भागने का कोई रास्ता मिल जाए तो ईश्वर के नाम पर मुझे यहां से छुड़ा ले चलना, वरना मैं यहां दीवार से सिर फोड़कर मर जाऊंगा । तुम मुझ पर विश्वास करो । मैं आखिरी दम तक तुम्हारा साथ दूंगा।'

कुछ देर तक तो उसका पड़ोसी हिचकिचाया और उससे तरह-तरह के सवाल पूछता रहा । जब उसे मालूम हुआ कि एडमण्ड पच्चीस साल का युवक है और उस पर विश्वास करने में कोई हर्ज नहीं है, तो वह उसे भी छुड़ाने के लिए राजी हो गया ।

इसके बाद एडमण्ड को कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी ।

एडमण्ड ने उस छेद को किसी तरह छिपा दिया। पहरेदारों ने दूर से देखा तो उन्हें कोई शक नहीं हुआ। उस दिन रात में एडमण्ड को आशा थी कि उसका पड़ोसी उससे बात करेगा, लेकिन रात-भर इन्तज़ार करने पर भी उधर से कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। दूसरे दिन जब पहरेदार खाना रख गया तो उसके बाद उसे पड़ोसी की कोठरी की तरफ से दीवार पर तीन थपकियां सुनाई दीं। एडमण्ड फौरन छेद के पास जाकर धीरे से बोला, 'हां, कहो।'

'क्या पहरेदार चला गया?'

'हां।'

'ठीक है, मैं अपना काम शुरू करता हूं। मैंने पहले से ही काफी इन्तज़ाम कर रखा है। मैं अभी उधर आता हूं।'

एडमण्ड ने देखा कि जिस छेद को वह बहुत छोटा समझता था, वह असल में काफी बड़ा था और उसके पड़ोसी ने अपनी तरफ की दीवार बहुत ज्यादा खोल डाली थी। थोड़ी देर की कोशिश के बाद ही छेद के दो-चार पत्थर निकल आए और फिर उसमें से एक हाथ दिखाई दिया। और देखते-देखते एक पूरा आदमी उस छेद में से निकलकर एडमण्ड के सामने आ खड़ा हुआ।

एडमण्ड दौड़कर उससे लिपट गया। उसने देखा कि उसके पड़ोसी की उम्र साठ-बासठ साल से कम नहीं थी, लेकिन फिर भी उसके शरीर में काफी ताकत थी। वह फारिया नाम का पादरी ही था, जिसे बरसों से यहां कैद करके रखा गया था। वह बोला, 'पहले हम लोग यह सब साफ कर डालें, वरना अगर कोई आ पहुंचेगा तो बड़ी दिक्कत होगी।' और फिर एडमण्ड के खोदे हुए छेदों को देखकर उसने कहा, 'तुमने तो कुछ खोदा ही नहीं। क्या तुम्हारे पास कोई औज़ार वगैरह नहीं है?'

एडमण्ड को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, 'औज़ार?' यहां जेल में औज़ार कहां से लाया जाए? क्या तुम्हारे पास हैं?'



पादरी हंसकर बोला, 'और क्या, बिना औजार के ही इतना सब हो गया ? मैंने कई तरह के औजार बना रखे हैं । दीवार में लगे हुए जंजीर के कांटों वगैरह को निकालकर मैंने अपने लिए औजार तैयार किए हैं । इन्हीं की मदद से मैं पचास फुट लम्बी जगह खोदते हुए अन्त में दुर्भाग्यवश तुम्हारी इस कोठरी में आ पहुंचा हूं !'

'पचास फुट ! यह तुम क्या कह रहे हो ?'

'हां भाई, मुझे पचास फुट लम्बी ज़मीन खोदनी पड़ी। ज़रा धीरे बोलो, दीवार के भी कान होते हैं। मैं निकलना तो बाहर चाहता था, और गलती से यहां आ पहुंचा हूं। लेकिन ईश्वर की इच्छा शायद यही थी।' यह कहकर उसने निराशा से आह भरी।

एडमण्ड बोला, 'क्या तुमने यहां से भाग निकलने की आशा छोड़ दी है ?''

पादरी बहुत ही बैठी हुई आवाज़ में बोला, 'हां, और क्या ! तुम्हारी कोठरी से भागने का कोई रास्ता नहीं है। इसके बाहर एक तरफ पत्थर की बहुत मोटी दीवार है। इसके अलावा इधर से भागने में पहरेदारों का भी बहुत डर है। फिलहाल जो ईश्वर की इच्छा है, वही होकर रहेगा।'

एडमण्ड ने उससे पूछा, 'लेकिन बाबा, तुमने यह नहीं बताया कि तुम कौन हो और यहां कैसे आए ? किस अपराध में तुम्हें गिरफ्तार किया गया ?'

पादरी ने बताया, 'मैं एक पादरी हूं और मेरा नाम फारिया है। मैं इटली देश का रहनेवाला हूं, जो आज टुकड़े-टुकड़े और शक्तिहीन हो चुका है। मैंने उसे एक स्वतन्त्र और प्रभावशाली राज्य के रूप में बदलने की कोशिश की। इस सिलसिले में मैंने एक लेख भी लिख डाला था। उसी लेख की वजह से मुझ पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और मुझे यहां बन्द कर दिया गया। इसके पहले तीन साल तक मैं इटली की एक जेल में था। अब तुम बताते हो कि सम्राट नेपोलियन भी फ्रांस के राजा नहीं रहे ! अब फ्रांस की भी वही दशा होगी जो उस समय इटली की थी।'

कुछ देर तक चुप रहकर पादरी बोला, 'अभी तो आगे का कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा है, इसलिए सिवा इसके और कोई चारा नहीं कि चुपचाप बैठकर मौके की राह देखी जाए। इस

बीच यह बताओ कि तुमने कितना पढ़ा-लिखा, मेरा मतलब यह है कि यहां खाली वक्त में तुम क्या पढ़ते रहे हो ?'

एडमण्ड आश्चर्य से उसका मुंह देखने लगा और बोला, 'यहां जेल में लिखाई-पढ़ाई कैसे हो सकती है ? न कागज, न कलम, न दवात, न किताब वगैरह ।'

पादरी बोला, 'लेकिन मैंने तो सारा इन्तज़ाम कर रखा है । मैंने मछली की हड्डी की कलम बना रखी है। मेरी कोठरी में शायद कभी एक भट्ठी रही है । उसकी कालिख एक कोने में खूब लगी हुई है । उसी को मैं स्याही की तरह इस्तेमाल करता हूं । जब कभी लाल स्याही की बहुत जरूरत पड़ी है तो मैंने अपनी उंगली चीरकर खून से लिखा है । इसके अलावा मेरे पास काफी किताबें भी हैं । रोम शहर में मेरे पुस्तकालय में करीब पांच हज़ार किताबें थीं । उनमें से करीब डेढ़ सौ किताबें मैं चुन लाया था । उन किताबों को अगर कोई आदमी पढ़ ले तो उसका ज्ञान बहुत बढ़ सकता है । ये किताबें बरसों से जेल में मेरे पास हैं और इन्हें अब तक मैं कई बार पढ़ चुका हूं । कई किताबें तो मुझे जबानी याद हो गई हैं ।'

एडमण्ड पादरी की इन सब बातों को सुनकर आश्चर्यचकित रह गया । वह बोला, 'आप तो कोई असाधारण व्यक्ति मालूम होते हैं । आप हम लोगों जैसे साधारण आदमी नहीं मालूम होते । सच है, बड़े-बड़े लेखकों की किताबें पढ़ने से आदमी का ज्ञान और हृदय विशाल होता जाता है । लेकिन अपनी ये किताबें आप मुझे कब दिखाएंगे ?'

'तुम जब कहो तब । अगर अभी चाहते हो तो चलो ।'

एडमण्ड बोला, 'चलो न, अभी मौका है ।'

पादरी उसको अपनी कोठरी में ले जाने के लिए राजी हो गया । दोनों उस छेद में सरकते हुए आगे बढ़ने लगे ।



6

वह छेद क्या था, जैसे एक लम्बी सुरंग थी, जिसे पादरी ने बड़ी मेहनत से तैयार किया था। लेकिन वह सुरंग इतनी संकरी थी कि उसमें आगे सरकने में बड़ी दिक्कत पड़ती थी। अपनी कोठरी में पहुंचने पर बूढ़ा पादरी बोला, 'अभी तो पहरेदारों के आने में करीब दो घंटे की देरी है। अभी काफी वक्त है।'

एडमण्ड को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने पूछा, 'वक्त का अन्दाज़ा आप इस कालकोठरी में कैसे लगा लेते हैं ?'

बूढ़े पादरी ने एक कोने में ऊपर बने हुए छोटे-से रोशनदान की ओर हाथ उठाकर कहा, 'वही मेरी घड़ी है। वहां मैंने धूप का निशान बना रखा है, उसी से अन्दाज़ा लगा लेता हूं।'

कोठरी के एक कोने में एक पुरानी भट्ठी थी। पादरी ने उसका पत्थर हटाया और उसमें से चार-पांच किताबों-जैसी कुछ चीजें निकालीं। ये लम्बे-लम्बे कपड़ों को मोड़ झाड़कर तैयार किए गए कुछ गट्ठर से थे। इन कपड़ों में बहुत ही बारीक बारीक अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था। पादरी ने बताया, 'यह इटली का इतिहास है। इसे आठ दिन में मैंने पूरा किया है। अगर कभी इस नरक से मुक्ति मिली तो एक दिन प्रकाशित होकर यह किताब दुनिया के विद्वानों में खलबली मचा देगी।'

'क्या दिन के उजाले में ही इतना सारा आपने लिख डाला ?'

'नहीं तो, मैं रात में भी काम करता हूं। तुम्हें शायद यह सुनकर आश्चर्य हो कि यहां रात में मुझे रोशनी कहां से मिलती होगी, लेकिन अगर आदमी में बुद्धि हो तो वह सब कुछ कर सकता है। हम लोगों को खाने को जो गोश्त मिलता है, उसमें



से चर्बी निकालकर रख लेता हूं और फिर उसी से दीया जलाता हूं।'

'लेकिन आग कहां से मिलती है ?'

पादरी ने एक कोने में पड़े दो चकमक पत्थरों की ओर इशारा कर दिया, जिन्हें घिसकर वह आग पैदा किया करता था। थोड़ी देर और इधर-उधर की बातें होती रहीं। एडमण्ड उस विचित्र पादरी की सूझ-बूझ पर आश्चर्य प्रकट करता रहा। अन्त में पादरी ने उससे पूछा, 'तुमने कहा था कि तुम बिलकुल निर्दोष हो, और तुम्हें बिना किसी अपराध के यहां बन्द कर दिया गया है ?'

एडमण्ड बोला, 'मैं बिलकुल सच कह रहा हूं। अगर आप कहें तो मैं अपने पिता की कसम खा सकता हूं। मुझे आज तक पता नहीं कि मुझे किस अपराध में पकड़ा गया है। और इस कालकोठरी में क्यों ठूंसकर रखा गया है।' और फिर एडमण्ड ने उसे अपने जीवन की पूरी कहानी कह सुनाई।

यह सुनकर पादरी कुछ देर तक चुप रहा और फिर बोला, 'तुम्हारी कहानी बड़ी अजीब मालूम होती है। हो सकता है, तुम्हें यह न पता हो कि किस अपराध में तुम्हें यहां बन्द किया गया है, लेकिन तुम पर कोई न कोई आरोप ज़रूर लगाया गया होगा। तुम यह सोचने की कोशिश करो कि तुम्हारे जेल में रहने से किसको सबसे अधिक लाभ हुआ है। किसी का लाभ ज़रूर है, वरना, तुम्हें जेल में बन्द न किया जाता। तुम बताते हो कि जहाज़ के कप्तान के रूप में तुम्हें तैनात किया गया था और तुम मर्सीदिस से शादी भी करने वाले थे। है न ? लेकिन ज़रा सोचो कि कप्तान बनाए जाने के बाद किसी को इस पर आपत्ति तो नहीं थी ? तुम्हारी जगह कोई दूसरा आदमी कप्तान तो नहीं बनना चाहता था ?'

पहले तो एडमण्ड को कुछ खास बात याद नहीं आई, लेकिन अन्त में उसने कहा, 'हां, डेंग्लर्स नाम का एक खलासी ज़रूर

था, जिसके कप्तान होने की बारी थी। और आज जब आप इस तरह पूछ रहे हैं तो मुझे यह भी याद आता है कि जब बूढ़े कप्तान ने मरने के पहले मुझे वह गुप्त कागज़ सौंपा था, उस समय हालांकि वहां कोई न था, लेकिन डैंग्लर्स को मैंने दरवाज़े के पास से जाते हुए देखा था।'

थोड़ी ही देर की बहस के बाद पादरी ने यह सिद्ध कर दिया कि डैंग्लर्स ही एडमण्ड की सारी तकलीफों का कारण है। धीरे-धीरे उसने याद करके पादरी को यह भी बताया कि फर्नान्दि मर्सादिस से शादी करना चाहता था, लेकिन वह इसके लिए राज़ी नहीं थी और इसी बात को लेकर फर्नान्द उससे बहुत नाराज़ था। और फर्नान्द और डैंग्लर्स में जान-पहचान थी। अन्त में वह बोला, 'अब मेरी समझ में सब कुछ आ गया। शादी के एक दिन पहले मैंने उन दोनों को एक शराबखाने में बैठे देखा था। अब मेरी समझ में आया कि ये लोग कितने दुष्ट हैं! लेकिन अब भी यह नहीं मालूम होता कि आखिर मुझे किस अपराध में सरकार ने जेल में बन्द कर रखा है। मजिस्ट्रेट साहब तो बहुत भले आदमी थे। वे मुझे बचाना चाहते थे। जेल के पहरेदार लोग मुझे उनसे मिलने नहीं देते, वरना मैं उनको याद दिलाता जो उन्होंने कहा था—तुम्हें किसी तरह की दिक्कत नहीं होगी और मैं तुम्हें ज़रूर बचा लूंगा।—उन्हें मुझ पर दया आई थी!'

पादरी कुछ देर तक सोचता रहा और फिर बोला, 'तुम बहुत भोले आदमी मालूम पड़ते हो। मुझे तो दाल में कुछ काला नजर आता है। मजिस्ट्रेट तुमपर क्यों दया करने लगा? क्या वह तुम्हारा दोस्त था? वह तो सरकारी आदमी है। यह बताओ कि उस कागज़ पर किसका नाम लिखा हुआ था?'

एडमण्ड सोचकर बोला, 'उस पर पेरिस में रहनेवाले किन्हीं मस्यू नोर्तियेर का नाम लिखा था और मजिस्ट्रेट साहब ने मुझसे कहा था कि इस कागज़ की बात किसी से न बताना। फिर

उन्होंने उस कागज़ को जला भी डाला था।'

पादरी बोला, 'अब मामला कुछ-कुछ साफ होता जा रहा है। इतना तो ज़ाहिर है कि मजिस्ट्रेट का इसमें कोई लाभ ज़रूर था, तभी उसने तुमसे कहा था कि इस कागज़ की बात किसी को मत बताना। और···और नोर्तियेर ?···इस नाम के किसी आदमी को तो शायद मैं भी जानता हूं। अच्छा, मजिस्ट्रेट का क्या नाम है ?'

'पूरा नाम तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन उन्हें लोग मस्यू विलफोर्ट कहते हैं।'

यह सुनकर पादरी उठ खड़ा हुआ और ज़ोर से हंस पड़ा। फिर बोला, 'तुम बिलकुल बच्चे हो। तुम्हें दुनिया का कुछ भी पता नहीं। अरे पगले, क्या इतनी भी बात तुम्हारी समझ में नहीं आती कि मजिस्ट्रेट ने उस कागज़ की बात को गुप्त रखने के लिए क्यों कहा था ? जानते हो, यह मस्यू नोर्तियेर, जिनके नाम वह गुप्त चिट्ठी थी, उसी मजिस्ट्रेट के पिता हैं। उस बदमाश ने अपने पिता को बचाने के लिए ही यह सब षड्यन्त्र रचा है, और तुम उसे बहुत भला आदमी समझे बैठे हो !'

एडमण्ड यह सब सुनकर भौचक्का रह गया। उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। वह कुछ देर तक आंखें फाड़कर पादरी की ओर देखता रह गया। उसने आज तक नहीं सोचा था कि कोई आदमी इतना नीच हो सकता है। वह फौरन उठ खड़ा हुआ और बोला, 'पादरी साहब, मेरा दिमाग चक्कर खा रहा है, मैं कुछ देर तक अकेला रहना चाहता हूं···इस समय मुझे जाने दीजिए।'

यह कहकर वह अपनी कोठरी में लौट आया और औंधे मुंह एक कोने में पड़ रहा। पिछले दिनों की सारी घटनाएं एक-एक करके उसकी आंखों के सामने से गुज़रने लगीं। उसे लगा कि पादरी का कहना बिलकुल सही है। पादरी ने जैसे उसकी आंखें खोल दीं। उसने कसम खाई कि वह इन लोगों से बदला लिए

बिना चैन नहीं लेगा। वह चुपचाप पड़ा रहा। पहरेदार कब आया और खाना रख गया, इसका भी उसे पता नहीं चला।

कुछ देर बाद मौका देखकर पादरी उसके पास आया और उसके सिर हर हाथ फेरकर उसे दिलासा देने लगा। लेकिन उसे रोककर एडमण्ड बोला, 'इस समय इन बातों को रहने दीजिए। आपने मेरी आंखें खोल दी हैं। इस समय मैं अपने आपे में नहीं हूं। लेकिन फिलहाल मैं कर ही क्या सकता हूं। अपना मन बहलाने के लिए मैं आपसे थोड़ा लिखना-पढ़ना सीखना चाहता हूं। क्या आप अपने अगाध ज्ञान में से कुछ मुझे नहीं देंगे?'

पादरी ने मुस्कराकर कहा, 'क्यों नहीं, पर मेरे पास है ही क्या? जो कुछ मैं जानता हूं, उसे सीखने में तुम्हें ज्यादा-से ज्यादा दो साल लगेंगे।'

इस तरह एडमण्ड ने पादरी से शिक्षा लेनी शुरू की। थोड़ा-थोड़ा पढ़ना-लिखना तो वह पहले से जानता था, लेकिन पादरी की मदद से उसे बड़ा लाभ हुआ।



7

पादरी ने यह कभी नहीं सोचा था कि एडमण्ड जैसा एक जहाज़ का खलासी बुद्धि का इतना तेज़ होगा। थोड़े ही समय में एडमण्ड पादरी से हर विषय की शिक्षा बड़ी तेज़ी से लेने लगा देखते-देखते वह साहित्य, तर्कशास्त्र, विज्ञान, गणित आदि सीख गया। यही नहीं, उसने स्पेनिश, इतालवी और अंग्रेज़ी भाषाएं भी सीख लीं। पहले तो पादरी को उसकी बुद्धि पर विश्वास ही नहीं हुआ था। वह सोचता था कि इतना सब सीखने में एडमण्ड को दो-तीन साल का समय लग जाएगा, लेकिन उसने एक साल में ही बहुत कुछ सीख लिया। इसी बीच एक बार पादरी को फिर से वहां से निकल भागने की कोशिश करने की याद दिलाई।

पहले तो पादरी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब एडमण्ड ने बार-बार कहा तो उसने एक शर्त पर वहां से भाग निकलना स्वीकार किया। शर्त यह थी कि भागते समय अगर कोई पहरेदार रास्ता रोकने की कोशिश करे तो एडमण्ड उसकी जान न ले। जब एडमण्ड इसके लिए राज़ी हो गया तो पादरी ने पहले से बनाया हुआ अपना नक्शा बाहर निकाला और उसके अनुसार अपनी योजना बनानी शुरू की। इस बार वह अकेला नहीं था। उसकी मदद के लिए एडमण्ड जैसा युवक भी था।

लेकिन उन्हें बड़ी सावधानी से काम लेना पड़ा। ज़मीन खोदने पर जो मिट्टी निकली थी उसे रोशनदान में से इस तरह से बाहर फेंकना पड़ता था कि किसी को कुछ पता न चल सके। रात में जब हवा चलती थी तो एक-एक चुटकी मिट्टी उसी के

सहारे उड़ा दी जाती। इसमें देर तो बहुत लगती थी, लेकिन इसके अलावा बचने का कोई रास्ता नहीं था।

इस तरह करीब पन्द्रह महीने तक काम करने के बाद एक नई सुरंग तैयार हो गई तो वे अंधेरी रात का इन्तज़ार करने लगे, क्योंकि चांदनी रात में निकलना असम्भव था। परन्तु इसी बीच एक विचित्र घटना हो गई।

एक दिन एडमण्ड सुरंग में काम कर रहा था कि इतने में एक हल्की-सी चीख उसके कानों में पड़ी। वह चौंककर सुरंग में आगे उतर गया, जहां पादरी काम में लगा हुआ था। एडमण्ड ने देखा कि पादरी दीवार से टिककर खड़ा हांफ रहा है। मारे दर्द के उसकी मुट्ठियां भिंच गई थीं, शरीर कांप रहा था और चेहरा बिलकुल उतर गया था।

एडमण्ड ने घबराकर पूछा, 'क्या हुआ ?'

बड़ी मुश्किल से धीरे-धीरे पादरी के मुंह से आवाज़ निकली। उसने कहा, अब ज़्यादा बात करने का समय नहीं रहा। सिर्फ इतना समझ लो कि एक भयानक बीमारी ने मुझ पर आक्रमण कर दिया है। इससे मेरा बचना मुश्किल है। यह मेरा पुराना रोग है। इसकी थोड़ी-सी दवा मैंने अपने पास बिस्तर के सिरहाने एक जगह छिपा रखी है। मुझे सहारा देकर ले चलो और बिस्तर पर लिटा दो। कुछ देर में मेरी बोलने की ताकत खत्म हो जाएगी। इसके बाद मेरा शरीर ठंडा होता चला जाएगा। जब तुम्हें लगे कि मेरे शरीर में ज़रा भी प्राण बाकी नहीं बचे तो किसी तरह ज़ोर लगाकर मेरा मुंह खोल देना और उसमें दवा की सात-आठ बूंदें डाल देना। देखना, इससे ज़्यादा मत डाल देना वरना फिर बचने की बिलकुल उम्मीद नहीं रहेगी !'

एडमण्ड यह सब सुनकर बहुत घबराया। वह पादरी को सहारा देकर बाहर लाया। फिर उसके कहे अनुसार उसने उसे बिस्तर पर लिटा दिया। बिस्तर पर गिरते ही पादरी एक बार और दर्द के साथ चीखा और फिर धीरे-धीरे उसका शरीर ठंडा

होने लगा । एडमण्ड ने मौका देखकर उसके मुंह में दवा की सात आठ बूंदें छोड़ दीं । करीब एक-डेढ़ घंटे बाद पादरी की आँखें खुलीं । यह देखकर एडमण्ड को ढाढ़स बंधा । लेकिन इस समय पादरी कुछ बोल नहीं पाता था । वह सिर्फ इशारे से बात करता था । उसने एडमण्ड को इशारा किया कि अब पहरेदार के आने का समय हो गया है । एडमण्ड फौरन भागकर अपनी कोठरी में जा पहुंचा जब पहरेदार लौट गया तो वह फिर से पादरी के पास जा पहुंचा । इस समय पादरी कुछ-कुछ बोल सकता था । कुछ देर बाद पादरी ने उससे कहा, 'तुम्हें यहाँ से अकेले जाना होगा ।'

एडमण्ड आश्चर्य में पड़कर बोला, 'क्यों, अकेले क्यों ?'

पादरी ने कहा, 'इसके पहले भी एक बार इस रोग का मुझ पर हमला हो चुका है लेकिन उस बार आधे के अन्दर ही मेरी तबीयत ठीक हो गई थी । परन्तु इस बार बहुत देर लगी, इससे मुझे लगता है कि मेरा शरीर अब बिलकुल बेकार हो गया है। सिर बहुत जल रहा है और हाथ-पाँव बिलकुल ढीले हो गए हैं । इसके बाद अगर फिर दौरा आया तो या तो मैं मर जाऊंगा या लकवे की मार से मेरा शरीर बिलकुल बेकार हो जाएगा ।'

एडमण्ड बोला, 'नहीं, नहीं, ऐसी बात न कहिए । आप पर रोग का हमला होने से पहले ही आप इस कालकोठरी से बाहर निकल जाएंगे ।'

'नहीं भाई, अब तुम्हें अकेले ही जाना होगा । मुझमें भागने की ताकत नहीं है। मेरा दाहिना हाथ बिलकुल सुन्न पड़ गया है, इसलिए समुद्र में तैरना भी मुश्किल है ।'

एडमण्ड उसे रोककर बोला, 'नहीं, अगर भागना हुआ तो आपके साथ ही भागूंगा, वरना मैं भी यहीं आपके साथ रहूंगा। अगर आप तैर नहीं सकते हैं तो मैं खुद आपको उठाकर तैर सकता हूं और समुद्र पार कर सकता हूं । आज आप और

आराम कर लीजिए। कल फिर इसके बारे में हम लोग बात करेंगे।'

दूसरे दिन जब एडमण्ड पादरी के पास पहुंचा तो उसने देखा कि वह एक पीला-सा कागज़ का टुकड़ा हाथ में लिए बैठा है। उसने वह कागज़ एडमण्ड के हाथ में थमा दिया। वह कहीं का नक्शा मालूम होता था, और उसमें टेढ़े-मेढ़े और बहुत ही बारीक अक्षरों में कुछ लिखा था। एडमण्ड आश्चर्य से उस कागज़ की ओर देखने लगा, तो पादरी ने उसको बताया, 'तुम्हारी समझ में यह नहीं आएगा। लेकिन यह कागज़ मेरे छिपे हुए खजाने का नक्शा है। आज मैं इसे तुम्हारे हाथ में सौंप रहा हूं। तुम सोचते होगे कि बीमारी के कारण इस बुढ़ौती में मेरा दिमाग खराब हो गया है, लेकिन ऐसी बात नहीं है। सचमुच वहां मेरा बहुत सारा धन गड़ा हुआ है।'

एडमण्ड आश्चर्य से उसकी ओर देखता रहा। फिर उसने कागज़ को पढ़ने की कोशिश की। लेकिन वह पूरा किस्सा नहीं समझ सका। अन्त में पादरी ने उसे अपनी कहानी बताई, जो इस प्रकार थी :

रोम नगर की बात है। एक समय वहां एलेक्जेंडर बर्जिया नाम के धर्मगुरु रहते थे। उनका लड़का सीज़र और लड़की लुकेसिया बहुत बदमाश और धन के लोभी थे। इन तीनों ने मिलकर जो जुल्म किया वह आज भी रोम के धर्मगुरुओं के इतिहास में कलंक के रूप में माना जाता है। ये ईसाइयों के धर्म-गुरु और पोप कहलाते थे।

एक बार बर्जिया को बहुत-से रुपयों की ज़रूरत पड़ी। रुपये मिलने का और कोई रास्ता न देखकर बाप-बेटे ने मिलकर एक षड्यन्त्र रचा और एक धनी आदमी से बहुत-सा धन लेकर उसे 'कार्डिनल' बनाने की योजना बनाई। कार्डिनल का पद पोप से नीचे माना जाता था। और पोप के मरने पर कार्डिनलों में से ही कोई पोप की गद्दी पर बैठता था।

अन्त में उन्होंने उस धनी आदमी को कार्डिनल बना ही दिया और उससे बहुत-सा धन वसूल किया। लेकिन इतने पर भी पोप की भूख शान्त नहीं हुई। पोप ने अपने लड़के के साथ मिलकर कार्डिनल की हत्या करने का निश्चय किया। उसे यह भी मालूम था कि कार्डिनल अपने भतीजे को बहुत मानता है, इसलिए उन दोनों को भोजन के लिए उसने अपने यहाँ निमन्त्रित किया।

पोप के महल में जो खाना कार्डिनल और उसके भतीजे को खिलाया गया, उसमें ज़हर मिला हुआ था कार्डिनल के प्राण तो खाना खाकर लौटते समय रास्ते में ही निकल गए, और उसका भतीजा घर पहुंचने के थोड़ी देर बाद मर गया। लेकिन मरने से पहले उसने अपनी स्त्री से कहा, 'चाचा के पुस्तकालय में एक किताब में उनका वसीयतनामा रखा है; उसे तुम ज़रूर ढूंढ़ निकालना। उन्होंने सारा धन मेरे नाम कर रखा है।'

उसके मरते ही पोप अपने आदमियों को लेकर उसके यहाँ आ पहुंचा। उसने कागज़-पत्र और किताबें उलट डालीं। बहुत खोज की, लेकिन उसे यह पता नहीं चल सका कि देश के उस सबसे अधिक धनी परिवार का गुप्त खज़ाना कहाँ रखा है। सामान में कुछ हज़ार रुपये मिले, उन्हें उसने अपने कब्ज़े में ले लिया और फिर निराश होकर वहाँ से लौट गया।

पोप के जाने के बाद उस धनी महाजन के वारिसों ने खज़ाने की खोज शुरू की। उन्होंने लाइब्रेरी का एक-एक कोना छान डाला, लेकिन सिर्फ एक वसीयतनामे के अलावा और कुछ नहीं मिला। सारी धन-सम्पत्ति न जाने कहाँ पड़ी थी।

जो वसीयतनामा मिला था वह बड़ा ज़रूरी था, क्योंकि उसमें महाजन ने अपना सारा धन और अपना पुस्तकालय वगैरह अपने भतीजे के नाम कर रखा था। इसके बाद एक किताब का भी उसमें ज़िक्र था और लिखा था कि मेरे वारिसों को चाहिए कि वे इस पुस्तक को छुएं तक नहीं। पहले तो सब लोगों ने सोचा

कि शायद इसी किताब में खज़ाने का रहस्य लिखा हो, लेकिन उसमें ऐसा कुछ नहीं निकला।

वह किताब असल में महाजन की डायरी थी। उसमें लिखा था :

'मेरे मालिक और इस वंश के सबसे पहले वारिस अमीर स्पाडा थे। मैं उनका गुमाश्ता था। उनकी धन सम्पत्ति की बात लोग तब भी नहीं भूले थे, लेकिन मैंने उसकी गरीबी अपनी आंखों से देखी थी। बहुत दिनों से मैं उस कागज़ की खोज में था, जिसमें इस परिवार के पुश्तैनी धन का रहस्य लिखा था।

'मैंने बहुत खोजा, एक-एक किताब छान डाली, लेकिन मेरे हाथ कुछ नहीं लगा। अमीर के आगे-पीछे कोई नहीं था। इसलिए मरने के समय अपने बचाए हुए करीब पांच हज़ार रुपये और लाइब्रेरी की सब किताबें, जिनमें वह किताब भी थी, एक वसीयत में लिखकर मेरे नाम करते गए। मकान तो उनके सामने ही बिक चुका था। मैंने कुछ दिन वहां रहने के बाद फ्लोरेन्स जाने का निश्चय किया, इसलिए मैं पुस्तकालय की सारी किताबों को डिब्बों में बन्द कराने लगा। इसी बीच वह किताब मेरे हाथ लग गई। मैं उस किताब को लेकर खिड़की के पास जा उसके पन्ने उलटने लगा। लेकिन थोड़ी देर में मुझे नींद आ गई।

'कुछ देर बाद जब आंख खुली तो देखा कि शाम हो गई थी और कमरे में अंधेरा छा गया था। नौकरों को शायद पता नहीं था कि मैं पुस्तकालय में हूं, इसलिए किसी ने वहां दीया जलाया ही नहीं। एक कोने में अंगीठी जल रही थी। मैं जिस किताब के पन्ने उलट रहा था, उसमें एक बहुत पुराना कागज़ पड़ा हुआ था। मैंने सोचा कि लाओ इसी कागज़ को अंगीठी में जलाकर दीया जला लिया जाए। जब मैं उस कागज़ को जलाने लगा तो उसमें अजीब-सी बदबू आई। लेकिन मैंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। जब मैं कागज़ को जलाकर बत्ती के पास पहुंचा तो मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जले हुए कागज

पर कुछ अक्षर बिलकुल साफ उभर आए थे, जिनमें कहीं 'हीरा' 'मोती' और 'सोने की मोहरें' वगैरह शब्द दिखाई देने लगे। अब मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि यही वह कागज है, जिसमें स्पाडा वंश के गुप्त खजाने का रहस्य लिखा हुआ है।

'उस ज़माने में एक खास तरह की स्याही होती थी, जिससे लिखी हुई चीज़ यों तो पढ़ने में नहीं आती थी, लेकिन जब उसे जलाया जाता था तो वह साफ प्रकट हो जाती थी। इस कागज को महाजन के कई रिश्तेदार सरगरमी से खोज रहे थे, लेकिन यह उन्हें नहीं मिला और अचानक मेरे हाथ लग गया। मैंने कोशिश करके जले हुए कागज़ पर से सारी बातें एक दूसरे कागज़ पर उतार लीं। लो, तुम खुद इस कागज़ को पढ़कर देख लो।'

—यह कहकर पादरी ने एडमण्ड के हाथ में एक कागज़ रख दिया। एडमण्ड ने उसे फौरन रोशनी में ले जाकर पढ़ना शुरू किया। उसमें लिखा था :

'मैं कार्डिनल स्पाडा अपने भतीजे और एकमात्र वारिस गुईडो स्पाडा को बताना चाहता हूं कि पोप ने आज दोपहर में मुझे अपने यहाँ भोजन के लिए निमन्त्रित किया है। मैं जानता हूं कि वह मेरे खजाने को लूटने के लिए मेरी हत्या करना चाहता है। यही सोचकर मैं अपने छिपे हुए खजाने का सारा किस्सा इस कागज़ में लिख देता हूं : मोण्टेक्रिस्टो टापू की ओर मेरा भतीजा कई बार मेरे साथ गया है। उसी टापू पर एक गुफा में मेरा सारा खजाना—हीरा, माणिक, मोती और सोने की मोहरें वगैरह—जिनकी कुल कीमत दो करोड़ रुपये से ज्यादा होगी, छिपाकर रखा गया है। पहले से दूसरी गुफा के पास खोजने पर इस खज़ाने का पता चल सकता है। —सीज़र स्पाडा'

—यह पढ़कर एडमण्ड कुछ देर तक सोचता रहा और फिर बोला, 'अच्छा, फिर इसके बाद ?'

पादरी ने कहा, 'इस कागज़ का अर्थ समझने के बाद मैं उसी दिन रोम नगर से चल पड़ा और इधर-उधर भटकने लगा, लेकिन



मोण्टेक्रिस्टो द्वीप तक मैं पहुंच नहीं सका। मेरे राजनीतिक विचारों के कारण कई दिनों से पुलिस ने मुझपर नज़र लगा रखी थी। जब मैं अचानक रोम छोड़कर निकल गया तो पुलिसवालों को कुछ शक हो गया और वे मेरे पीछे पड़ गए और रास्ते में ही उन्होंने मुझे गिरफ्तार कर लिया। तब से मैं यहीं पड़ा हूं। अब और तुम्हें क्या बताऊं? अगर किसी दिन हम लोग यहां

से निकल सके तो उस खज़ाने को पाने की कोशिश करेंगे। अगर इस बीच मैं मर जाऊं तो मुझे उम्मीद है कि तुम ज़रूर इस काम को पूरा करोगे। इतना बड़ा खज़ाना तुम्हारे हाथ आ जाएगा।'

एडमण्ड ने पूछा, 'क्या अब उस वंश का कोई वारिस नहीं बचा?'

'नहीं, कोई नहीं! उसका आखिरी वारिस सब कुछ मुझे सौंप गया है, और अब मैं तुम्हें अपना वारिस बनाता हूं। मैं तो संन्यासी हूं, मुझे धन सम्पत्ति से क्या? इसके अलावा मेरे कोई संतान भी नहीं। तुमने आखिरी समय में मेरी इतनी सेवा की है, इसलिए सारा धन मैं तुम्हीं को सौंप देना चाहता हूं।' यह कहकर पादरी ने स्नेह से एडमण्ड का कन्धा थपथपा दिया।



8

अब दोनों ने मिलकर वहाँ से भाग निकलने की योजना बनानी शुरू की, लेकिन साथ ही पादरी ने एडमण्ड को पहले से मोण्टेक्रिस्टो द्वीप का रास्ता बता दिया, ताकि अगर वह मर जाए तो भी एडमण्ड को वहाँ पहुंचने में दिक्कत न हो। क्योंकि पादरी को शक हो गया था कि अब वह ज़्यादा दिन जीवित नहीं बचेगा। उसका रोग बढ़ता ही जा रहा था।

और एक दिन सचमुच पादरी की तबीयत बहुत खराब हो गई। पादरी ने आवाज़ देकर एडमण्ड को अपनी कोठरी में बुलाया। एडमण्ड जब तक उसके पास पहुंचा, पादरी बेहोश हो गया था। एडमण्ड ने उसी दवाई को फिर से पादरी के मुंह में डाला, लेकिन इस बार पादरी पर उसका कोई असर नहीं हुआ। पादरी मर चुका था!

एडमण्ड ने सबसे पहले उस खज़ाने के रहस्य वाला कागज़ पादरी के पास से निकालकर अपनी जेब में रखा और फिर उसकी लाश को कोठरी के दरवाज़े के पास खिसकाकर वह सुरंग में उतर गया। लेकिन लौटने के पहले उसने सुरंग का मुंह इस तरह बन्द कर दिया कि किसीको शक न हो। फिर वह अपनी कोठरी में लौट आया।

शाम को जब पहरेदार खाना देने आया और पादरी की कोठरी के पास पहुंचा तो थोड़ी ही देर में उसे मालूम हो गया कि पादरी मर चुका है। वह दौड़ा गया और जेल के अधिकारियों को बुला लाया। उन लोगों ने आकर पादरी की कोठरी का दरवाज़ा खोला। उनके साथ जो डाक्टर था उसने अच्छी तरह जांच करके बताया कि पादरी सचमुच मर चुका है। इस

पर जेलर ने पहरेदारों से कहा, 'यह बेचारा पादरी था और भला आदमी था इसके लिए कफन का इन्तज़ाम कर दो।'

पहरेदार ने पूछा, 'ठीक है, हजूर, लेकिन इसकी लाश का का क्या किया जाए?'

'कुछ नहीं, बस रात को ग्यारह बजे…'

असल में उस जेल में यह प्रथा थी कि जो कैदी मर जाता था, उसकी लाश को पहाड़ से समुद्र में फेंक दिया जाता था। पहरेदारों ने पादरी की लाश को एक कफन में अच्छी तरह लपेटकर बाँध दिया और फिर वे वहां से चले गए। उधर एडमण्ड यह सब सुन रहा था। अचानक उसे एक तरकीब सूझी। उसने सोचा कि इस कालकोठरी से निकलने का सिवा इसके और कोई रास्ता नहीं है कि आदमी मर जाए और फिर उसे पहरेदारों द्वारा बाहर फेंक दिया जाए। वह चुपचाप सुरंग में होकर पादरी की कोठरी में पहुंचा। उसने पादरी की लाश को कफन से निकालकर सुरंग में रख दिया और सुरंग का मुंह अच्छी तरह बन्द कर दिया। फिर वह खुद उस कफन को ओढ़कर मुर्दे की तरह वहीं लेट गया।

रात हुई। थोड़ी देर बाद तीन पहरेदार वहाँ आए। उनमें से एक मशाल लिए हुए था। बाकी दो पहरेदारों ने आकर कोठरी का दरवाज़ा खोला और कफन में लिपटे हुए एडमण्ड को पादरी का शव समझकर उसे एक बोरे में ठूंस दिया। फिर वे लोग उसको लादकर जेल से बाहर आए। इतने वर्षों बाद आज पहलीबार एडमण्ड उस नरक जैसे कारागार से किसी तरह बाहर निकला।

पहरेदार उसे उठाकर समुद्र के किनारे पहुंचे। आसपास चट्टानी जगह थी। उनकी ठोकर से जब कोई पत्थर लुढ़क जाता था तो आसपास की चट्टान गूंज उठती थीं। किनारे की ठंडी-ठंडी हवा और चट्टानों पर समुद्र की लहरों के टकराने से ही एडमण्ड ने अन्दाज़ा लगाया कि वे लोग समुद्र के किनारे आ



पहुंचे हैं।

कुछ दूर चलकर वे एक चट्टानी कगार पर खड़े हो गए और फिर उन्होंने बोरे को झुलाकर समुद्र में फेंक दिया। नीचे पानी में ज़ोर से छपाक् की आवाज़ हुई। पहरेदार वापस लौट गए।



9

पानी में गिरते ही एडमण्ड ने चैन की सांस ली और ईश्वर को धन्यवाद दिया। वह पुराना जहाजी मल्लाह था। तैरने में बहुत होशियार था। समुद्र से उसको बिलकुल डर नहीं लगता था। उसने थोड़ी सी कोशिश के बाद अपने को बोरे से बाहर निकाल लिया और फिर वह ऊपर पानी की सतह पर आ पहुंचा। उसने ऊपर आंख उठाकर देखा तो आसमान में घने बादल छाए हुए थे। रह रहकर बिजली चमक जाती थी।

लहरों के थपेड़े खाता हुआ वह चट्टानी किनारे से बहुत आगे निकल आया था। सामने और दूर चारों तरफ, जहां तक उसकी नज़र जाती थी, पानी ही पानी था। वह लौटकर किनारे की तरफ नहीं जा सकता था। इसलिए वह आगे ही समुद्र में बहने लगा। इतने में पानी बरसना भी शुरू हो गया। लेकिन उसने इसकी कोई परवाह नहीं की। वह धीरे-धीरे तैरता ही रहा। मन में वह कभी-कभी घबरा उठता था कि आखिर वह कभी किनारे पर पहुंचेगा भी, या समुद्र में हमेशा के लिए जल-समाधि ले लेगा। लेकिन जब उसे अपने पिता की और मर्सीदिस की याद आती थी तो वह फिर से उत्साह में भरकर हाथ-पांव चलाने लगता था।

करीब दो घंटे तक इसी तरह अंधेरे में हाथ पैर फेंकते रहने के बाद वह एक द्वीप के किनारे लग गया अब तक वह बिलकुल थककर चूर हो चुका था। उसके हाथ पैर ठंडक के कारण सुन्न हो रहे थे। किनारे तक पहुंचते पहुंचते वह बिलकुल लड़खड़ाने लगा और एक चट्टान पर गिरकर बेहोश हो गया। करीब एक घंटे बाद वह होश में आया। तब तक पानी रुक गया था और

आसमान साफ होने लगा था।

होश में आने पर उसे फिर चिन्ता होने लगी कि अब आगे भागकर किस तरह जान बचाई जाए; क्योंकि वह जानता था कि जब पहरेदार उसकी कोठरी में खाना रखने जाएंगे, तो उन्हें सब कुछ मालूम हो जाएगा और चारों तरफ उसकी खोज शुरू हो जाएगी। यही नहीं, जेलवाले एक तोप छोड़कर आसपास के लोगों को यह भी सूचित कर देंगे कि एक कैदी भाग निकला है और इस तरह सैकड़ों आदमी उसकी खोज में लग जाएंगे। अगर वह उनके हाथ पड़ गया तो फिर मौत ही समझो ! वह ईश्वर से मदद के लिए प्रार्थना करने लगा।

थोड़ी देर बाद जब आसमान बिलकुल साफ होने लगा और चाँद चमकने लगा तब उसने देखा कि दूर कोई जहाज़ जा रहा है। असल में यह द्वीप समुद्र के बीच में पड़ता था, और जहाज़ इसके पास से होकर निकल जाया करते थे। जहाज़ को देखते ही एडमण्ड की आँखें चमक उठीं। उसने सोचा कि ईश्वर ने उसकी प्रार्थना सुन ली और उसका रास्ता कुछ आसान हो गया। अब फिर से पानी में घुसने की उसकी इच्छा नहीं थी। उसके हाथ पैर अभी तक ठीक नहीं हुए थे, लेकिन फिर भी वह पानी में कूद पड़ा और जहाज़ की ओर तैरने लगा।

इस बार एडमण्ड बड़ी तेज़ी से हाथ पैर फेंक रहा था और जल्दी से जल्दी जहाज़ के पास पहुंचने की कोशिश कर रहा था, क्योंकि वह जानता था कि यदि इस बार वह चूक गया तो आगे वह बहुत बड़े संकट में फंस जाएगा। सवेरा होते ही पहरेदार उसे गिरफ्तार कर सकते थे। वह ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ लगाने लगा, लेकिन जहाज़ चुपचाप अपने रास्ते पर बढ़ता रहा। किसीने उसकी चीख-चिल्लाहट पर ध्यान नहीं दिया।

लेकिन इतने पर भी एडमण्ड ने हिम्मत नहीं हारी। वह आवाज़ देता रहा और जहाज़ की ओर बढ़ता रहा। अब वह जहाज़ के काफी पास पहुंच चुका था। उसने यहां तक पहचान

लिया था कि यह जहाज़ इटली की ओर जा रहा है। अब वह और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। अन्त में जहाज़ के लोगों ने उसकी आवाज़ सुन ही ली। थोड़ी ही देर में जहाज़ की चाल धीमी हुई। जहाज़ को रुकते ही उसमें से नाव ऊपर से लटका-कर पानी में उतारी गई। एडमण्ड पूरा ज़ोर लगाकर नाव के पास पहुंचने की कोशिश करने लगा। नाव के पास पहुंचते-पहुंचते वह डूबने लगा। अब उसके हाथ पैरों में ज़रा भी ताकत नहीं बची थी। लेकिन नाव में बैठे हुए एक मल्लाह ने उसे खींचकर नाव में चढ़ा लिया।

जहाज़ में पहुंचने तक एडमण्ड आधा बेहोश हो चुका था। मारे थकान के उसके मुंह से बोल तक नहीं निकल रहा था। जहाज़वालों ने उसे थोड़ी सी शराब पिलाई और कम्बलों में लपेट दिया। जब उसकी तबीयत कुछ ठीक हुई तो एक मल्लाह ने उससे पूछा, 'तुम कौन हो भाई ?'

एडमण्ड कुछ देर चुप रहकर बोला, 'मैं माल्टा के एक जहाज़ का मल्लाह हूं। तूफान में मेरा जहाज़ डूब गया। जहाज़ का कप्तान और मेरे साथ के दूसरे मल्लाह भी डूब गए। मुझे कुछ पता नहीं कि मेरी तरह उनमें से कोई बचा भी है या नहीं। मैं भी डूबने ही वाला था कि ईश्वर की कृपा से आपका जहाज इधर आ निकला और आप लोगों ने मुझे बचा लिया।'

मल्लाह बोला, 'तुम तो बुरी तरह थक गए थे। अगर मैं तुम्हें खींचकर नाव में नहीं चढ़ा लेता तो बहुत मुमकिन था कि तुम हमारे जहाज़ के पास आने पर भी डूब गए होते। मैंने तुम्हें बचाया है, मेरा नाम जेकोपो है।'

एडमण्ड ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, 'धन्य-वाद भाई, तुमने मेरी जान बचाई है। भगवान तुम्हारा भला करे !'

जेकोपो उसके बड़े बड़े बालों और कई दिनों की बढ़ी दाढ़ी मूंछ की ओर देखकर बोला, 'लेकिन तुम्हारे बाल इतने बढ़ कैसे



गए ? मुझे तो शक हो रहा था कि कहीं तुम कोई…'

एडमण्ड कुछ चौंका। सचमुच उसके बाल बहुत बढ़ गए थे। कोई भी उसे देखकर समझ सकता था कि यह आदमी ज़रूर जेल से भागा है। लेकिन वह मुस्कराकर बोला, 'अरे नहीं भाई, बात यह है कि मैंने एक मनौती मान रखी थी कि कुछ साल तक दाढ़ी मूंछ नहीं बनवाऊंगा। मेरी मनौती पूरी हो चुकी है और बाल बनवाने वाला ही था कि भाग्य के फेर से मैं इस दुर्घटना में फंस गया।'

जहाज़ के कप्तान ने एडमण्ड से पूछा, 'क्यों भाई, अब तुम्हारा क्या इन्तज़ाम किया जाए ?'

एडमण्ड बोला, 'अब मैं क्या बताऊं ? मेरा तो जहाज ही नहीं रहा। जहाज गया नौकरी भी गई। अगर आप किसी जहाज़ में काम दिला दें तो ज़िन्दगी भर मैं आपका एहसान मानूंगा।'

कप्तान इसके लिए राज़ी हो गया। कप्तान ने उसे अपने जहाज पर ही नौकर रख लिया। कप्तान उसका काम देखकर बहुत खुश हुआ, क्योंकि उसने देखा कि एडमण्ड एक अनुभवी मल्लाह है और उसके साथ के मल्लाहों से ज़्यादा अच्छा काम जानता है।



10

दो दिन ही उस जहाज में काम करने पर एडमण्ड को मालूम हो गया कि यह जहाज कैसा है और उसे चलानेवाले कौन लोग हैं। असल में वह चुंगी-चोरों का जहाज था। वे लोग बिना चुंगी दिए कीमती माल को एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह में चोरी से पहुंचाने का काम करते थे। लेकिन इसी जहाज के लोगों ने उसे डूबने से बचाया था और अपने यहाँ शरण दी थी, इसलिए एडमण्ड ने चुप रहना ही ठीक समझा।

लेकिन वह पादरी की बात नहीं भूला था। दिन रात वह मोण्टेक्रिस्टो के खज़ाने के सपने देखा करता था। कई बार उसका जहाज़ मोण्टेक्रिस्टो टापू के पास से होकर गुजरा। यहाँ तक कि एक बार तो उसके जहाज़ ने मोण्टेक्रिस्टो टापू पर कुछ समय तक लंगर भी डाला और माल का लेन देन भी किया। लेकिन इतने लोगों के बीच किसी छिपे हुए खज़ाने की खोज करना मुश्किल था। उसे कुछ दिनों के लिए अपनी इच्छा को दबाए रखना पड़ा।

इसी तरह करीब चार महीने बीत गए। लेकिन एक दिन अचानक एडमण्ड को मौका मिल गया। हुआ यह कि उसका जहाज़ मोण्टेक्रिस्टो द्वीप के पास एक जगह बालू में धंस गया। जब तक जहाज़ चलने लायक न हो, तब तक के लिए जहाज़ के मल्लाहों ने तय किया कि चलो, टापू पर शिकार की खोज की जाए। एडमण्ड भी उनके साथ साथ बन्दूक लेकर चल पड़ा। कुछ दूर चलने पर एडमण्ड ने बहाना बनाया कि उसके दोनों पैरों को अचानक लकवा मार गया है और अब वह बिलकुल चल फिर नहीं सकता। जहाजियों ने उसे उठाकर जहाज़ में

वापस लाना चाहा, लेकिन एडमण्ड इसके लिए राजी नहीं हुआ और उन्हें समझाने लगा कि कहीं पुलिस न आ जाए और जहाज में चोरी का माल भरा हुआ है, इसलिए जल्दी से जल्दी जहाज को इस द्वीप से अलग कर दिया जाए और उसे यहीं छोड़ दिया जाए।

वह कहने लगा, 'तुम लोग मुझे यहीं छोड़ दो। ईश्वर की कृपा से कुछ दिनों में मैं ठीक हो जाऊंगा। फिर लौटते समय तुम मुझे लेते जाना। इस समय तो मुझमें हिलने डुलने की ताकत नहीं है और मेरे दोनों पैर बिलकुल बेकार हो चुके हैं।'

कुछ देर तक जहाजियों ने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन फिर भी उन्होंने यही ठीक समझा। एडमण्ड को कुछ गोली बारूद देकर और एक बन्दूक उसीके पास छोड़कर वे लोग वापस किनारे पर लौट आए। तब तक कप्तान ने जहाज को बालू में से निकाल लिया था। थोड़ी देर बाद ही जहाज चल पड़ा।

जब जहाज द्वीप से काफी दूर आगे निकल गया तो एडमण्ड उठ खड़ा हुआ। इस मौके के लिए उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और फिर वह बड़े मजे में छिपे हुए खजाने की खोज में निकल पड़ा।

काफी देर तक पहाड़ों के बीच भटकने के बाद एडमण्ड ने वह गुफा खोज निकाली। उस गुफा के मुंह पर एक बड़ा भारी पत्थर रखा हुआ था। एडमण्ड की समझ में नहीं आया कि बड़ा पत्थर यहां किसने रखा होगा। इतना बड़ा पत्थर तो कोई राक्षस ही उठा सकता है। वह गुफा के सामने खड़ा यही सब सोच रहा था कि अचानक उसकी नजर पास ही एक दूसरे पत्थर पर पड़ी। उस पर एक चिह्न बना हुआ था। यह चिह्न स्पाडा वंश का था। इसके बारे में पादरी ने उसे बताया था। इस चिन्ह को देखकर एडमण्ड खुशी से नाच उठा।

इतनी बड़ी चट्टान को कैसे हटाया जाए, यह एक बहुत बड़ी

समस्या थी, लेकिन इसका भी उसने हल निकाल ही लिया। उसने उस चट्टान के नीचे थोड़ा-सा गड्ढा किया और उसमें बारूद भर दिया। फिर उसने कुछ सूखी हुई लताओं को लपेट कर एक रस्सी सी बना ली और उसमें आग लगा दी। आग लगाने के बाद ही वह दौड़कर दूर जा खड़ा हुआ। जब आग बारूद के ढेर के पास तक पहुंची तो एक बहुत जोर का धड़ाका हुआ और चट्टान खिसककर नीचे घाटी में लुढ़क गई। आवाज़ को सुनकर गुफा में से एक बड़ा भारी अजगर बाहर आया और एक तरफ निकल गया जैसे अब तक वह स्पाडा वंश के खज़ाने की रक्षा कर रहा था।

पत्थर के खिसकते ही एडमण्ड ने देखा कि गुफा का मुंह छोटे बड़े पत्थरों से अच्छी तरह बन्द करके रखा गया है। बीच में बड़ा पत्थर था और उसमें लोहे की एक कड़ी लगी हुई थी। एडमण्ड ने एक पेड़ की डाली तोड़कर उस कड़ी में पिरोई और फिर उसे ज़ोर से खींचना शुरू किया। बड़ी मेहनत के बाद धीरे धीरे पत्थर एक तरफ को खिसकने लगा। जब पत्थर कुछ खिसक गया तो उसने अन्दर झाँककर देखा। अन्दर जाने के लिए पत्थर की एक सीढ़ी बनी हुई थी। वह सीढ़ी से होकर नीचे उतरने लगा।

नीचे पहुंचने पर उसने देखा कि वह एक छोटी सी कोठरी में जा पहुंचा है। लेकिन यह कोठरी तो बिलकुल खाली थी। इसमें कुछ नहीं था। एडमण्ड यह देखकर बहुत चकराया। उसने सोचा कि कहीं वह किसी गलत गुफा में तो नहीं आ गया है, या कहीं ऐसा तो नहीं हुआ है कि कोई यहाँ से खज़ाना चुरा ले गया हो ! इतने में उसे पादरी की बात याद आई। पादरी ने उसे बताया था कि उसी गुफा में कहीं खज़ाना रखा है और पहले जो कोठरी पड़ती है, उसमें से दूसरी गुफा में जाने का रास्ता है।

यह याद आते ही उसने फिर से खोज शुरू की। वह उस कोठरी की दीवारों को टटोलकर देखने लगा। एक जगह उसे

लगा कि वहां का पत्थर पोला है। उसने ज़ोर लगाकर उसी जगह चोट करनी शुरू की। थोड़ी ही देर में यह पत्थर निकल आया और वहां एक सुरंग दिखाई देने लगी। लेकिन यहां बिलकुल अन्धकार था। इसलिए बाहर जाकर वह एक पेड़ की डाली को मशाल की तरह सुलगाकर फिर से अन्दर पहुंचा।

अब वह सुरंग में होकर दूसरी गुफा में पहुंचा तो वह भी बिलकुल खाली मिली। लेकिन इस बार वह निराश नहीं हुआ। उसने ज़मीन पर चोट करनी शुरू की। थोड़ी ही देर में उसे लगा कि मिट्टी के ढेर के नीचे कोई चीज़ छिपी हुई है। उसने मिट्टी हटानी शुरू की। थोड़ी देर में उसमें से लकड़ी का एक सन्दूक निकल आया। उसपर चारों तरफ से लोहे की पट्टियां लगी हुई थीं और एक मज़बूत ताला उसमें लटका हुआ था। इस सन्दूक पर स्पाडा वंश का चिह्न भी बना हुआ था।

एडमण्ड ने ठोकर मारकर देखा कि सन्दूक की लकड़ी बहुत पुरानी हो चुकी है। उसने ज़ोर से लकड़ी से उसपर बार किया और सन्दूक की पटरी एक तरफ से खुल गई। उसने पटरी को हटाकर देखा तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गई। सन्दूक में तीन खाने बने हुए थे। एक में वर्षों पुरानी मोहरें भरी हुई थीं। दूसरी में सोने की ईंटें रखी थीं और तीसरे खाने में हीरे, मोती और दूसरी तरह के जवाहरात भरे हुए थे।

एडमण्ड की खुशी का ठिकाना नहीं था। इस समय उसे पादरी की बहुत याद आई। अगर आज वह होता तो कितना खुश होता! उसने अपनी जेबों में हीरे, मोती और सोने की मोहरों को ठूंसना शुरू किया। जब जेबें भर गई तो उसने सन्दूक को फिर से बन्द कर दिया और उसे उसी तरह मिट्टी के ढेर में छिपा दिया।

बाहर आकर उसने सुरंग का मुंह ठीक से बन्द कर दिया, फिर गुफा के बाहर आकर उसने सूखी हुई टहनियों और झाड़ियों



से गुफा का मुंह इस तरह छिपा दिया कि किसीको आसानी से पता ही न चल सके कि यहाँ कोई गुफा है।



11

अब एडमण्ड जंगली फल खाकर उसी टापू पर इधर-उधर भटकने लगा और जहाज़ के आने का इन्तज़ार करने लगा।

करीब पाँच दिन बाद जहाज़ आ पहुंचा। एडमण्ड लंगड़ाते हुए किनारे की ओर खिसकने लगा। उसने ऐसा बहाना बनाया जैसे इतने दिनों तक वह बीमार पड़ा रहा और अब उसके पैर कुछ-कुछ ठीक हो रहे हैं। उसने अपनी जेबों को अच्छी तरह छिपा रखा था जहाजियों ने उसे फिर से अपने जहाज में जगह दे दी, लेकिन अब वह काम नहीं कर पाता था, इसलिए वे भी उसकी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं देते थे। जहाज़ जब लौटने बन्दरगाह में पहुंचा तो जहाजियों ने एडमण्ड को उतार दिया। एडमण्ड उनसे विदा होकर शहर की ओर गया।

शहर में वह एक बड़े जौहरी के पास पहुंचा और उसे अपने हीरे-मोती दिखाने लगा और सौदा पटाने लगा।

यह जौहरी वैसे तो शहर का बहुत बड़ा आदमी था, लेकिन यह यहूदी था और चोरी का माल भी खरीदा करता था। उसने एडमण्ड से कुछ नहीं पूछा, और बाज़ार के भाव से बहुत ही कम दाम पर उसके सारे जवाहरात खरीद लिए। एडमण्ड ने भी सस्ते में सारे हीरे-मोती बेच दिए। फिर भी उसे बदले में जितना रुपया मिला वह किसी छोटे-मोटे सेठ की पूंजी के बराबर था। रुपया लेकर एडमण्ड जहाज़ के एक कारखाने में गया। वहाँ उसने एक छोटा-सा, लेकिन बहुत अच्छी किस्म का जहाज़ खरीदा। फिर वह जेकोपो के पास पहुंचा और उसे एक सौ सोने की मोहरें देकर बोला, 'तुम्हारे लिए ही यह मैंने खरीदा है। आज से तुम इसके कप्तान हुए। तुम इस जहाज़ को अपना ही समझो और

जितने खलासियों को चाहो, अपनी मदद के लिए रख लो।'

जेकोपो आश्चर्य से उसकी ओर देखता रह गया। एडमण्ड की बातचीत से शुरू-शुरू में उसे ऐसा जरूर लगा था कि यह किसी अच्छे खानदान का आदमी है, लेकिन उसने सपने में भी इसकी कल्पना नहीं की थी कि एडमण्ड इतना धनी है। उसने एक जहाज़ और सोने की एक सौ मोहरें दी थीं, इतना बड़ा इनाम तो एक बादशाह भी नहीं दे सकता। एडमण्ड ने उसे समझाते हुए कहा, मेरे चाचा बहुत धनी आदमी थे। हाल ही में उनकी मृत्यु हुई है और वे अपनी सारी जायदाद मेरे नाम कर गए हैं। अब तुम यहाँ से सीधे मार्सेल्स चले जाओ और वहाँ जाकर दान्ते नाम के एक बूढ़े व्यक्ति और मर्सीदिस नामक युवती की खोज करो। उनका पता मैं बताए देता हूं। उन लोगों की खबर लेकर तुम मोण्टेक्रिस्टो टापू पर मुझसे मिलना। मैं वहीं तुम्हारा इंतज़ार करूंगा।'

इसके बाद एडमण्ड ने उस जहाज़ के कप्तान को और दूसरे खलासियों को बहुत सारा इनाम दिया, जिसमें जेकोपो पहले काम करता था। दूसरे दिन ही जेकोपो मार्सेल्स के लिए रवाना हो गया। इसके बाद एडमण्ड ने एक छोटा-सा जहाज़ अपने लिए खरीदा और उसमें एक बड़ा-सा सन्दूक छिपाकर रख दिया। फिर वह मोण्टेक्रिस्टो द्वीप के लिए रवाना हो गया।

रात में चुपके से द्वीप के किनारे पहुंचकर एडमण्ड ने एक जगह जहाज़ छिपा दिया और फिर वह गुफा में जाकर सारा धन निकाल लाया सारे हीरे-जवाहरात और मोहरों को उसने उस बड़े-से सन्दूक में छिपाकर रख दिया।

इस काम में उसे दो दिन लग गए। तब तक जेकोपो भी वापस लौट आया। उसने जो खबर सुनाई वह बड़ी निराशा-जनक थी। उसने बताया कि दान्ते की मृत्यु हो चुकी है और मर्सीदिस कहीं चली गई है। अपने पिता की मृत्यु और मर्सीदिस के गायब हो जाने की खबर सुनकर एडमण्ड की आँखों के आगे

अंधेरा छा गया। लेकिन किसी तरह उसने अपने को संभाल लिया।

दूसरे दिन एडमण्ड मार्सेल्स के लिए रवाना हो गया। पहले तो उसे शहर में जाते हुए बड़ा डर लग रहा था। लेकिन हिम्मत करके उसने अंग्रेज़ सरदार का भेस बनाया और फिर वह शहर में पहुंचा। उसे यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि कोई भी उसे पहचान नहीं सका। उलटे पुलिस के सिपाहियों ने बड़े अदब के साथ उससे बात की। यहाँ तक कि उसके पुराने जहाज़ी साथी भी उसे पहचान नहीं सके।

शहर में जाकर वह उस मकान-मालिक से मिला, जिसके मकान में उसका बूढ़ा पिता रहता था। उसने मकान-मालिक को मुंहमाँगा दाम देकर उससे वह मकान खरीद लिया। फिर उसने धीरे-धीरे पता लगाना शुरू किया कि उसके पुराने शत्रु डेंग्लर्स, फर्नान्द वगैरह का क्या हुआ और मर्सीदिस कहाँ गई।

कुछ ही दिनों में उसे मालूम हो गया कि डेंग्लर्स ने किसी तरह तिकड़म करके काफी पैसा पैदा कर लिया है और अब वह पेरिस का एक बहुत बड़ा महाजन माना जाता है। लोग उसका बड़ा मान करते हैं।

फर्नान्द पहले यूनान गया और फिर वहां से तुर्की जा पहुंचा। उसने वहां लोगों को ठगकर किसी तरह बहुत रुपया जमा किया और अब वह भी पेरिस के एक बहुत बड़े अमीर की तरह माना जाता है। एडमण्ड को यह भी मालूम हुआ कि मर्सीदिस करीब अठारह महीने तक उसका इन्तज़ार करती रही और अन्त में मजबूर होकर उसने फर्नान्द के साथ शादी कर ली। अब पेरिस की धनी घर की महिलाओं के बीच उसकी उठ-बैठ होती है, और लोग उससे मदद माँगने के लिए आया करते हैं।

यह सब मालूम करके एडमण्ड मारे गुस्से के आपे से बाहर हो गया। मर्सीदिस उसकी मंगेतर थी और पीछे उसने उसके जानी दुश्मन फर्नान्द के साथ शादी कर ली। जब आसपास के

लोगों से उसने यह सुना कि उसके पिता की मृत्यु किस प्रकार हुई, तो उसके दुःख की सीमा न रही। लोगों ने उसे बताया कि उसके पिता बूढ़े दान्ते को भूख से तड़पकर अपनी जान दे देनी पड़ी। मोरेल ने उसकी मदद करनी चाही थी, लेकिन उसने उससे मदद नहीं ली। वह बेचारा अपने बेटे की याद में रो-रोकर मर गया। उसे यह भी मालूम हुआ कि डैंग्लर्स की धोखेबाज़ी के कारण मोरेल का दिवाला निकल गया। अब वह राह का भिखारी बन गया था और डैंग्लर्स, जो एक दिन उसके जहाज़ का साधारण खलासी था, आज लखपति बन गया था।

एडमण्ड जानता था कि उसके पुराने मालिक मोरेल ने उसकी और उसके पिता की कितनी मदद की थी। जब उसने सुना कि मोरेल का दिवाला निकल गया है और उसके सारे जहाज़ एक-एक करके उसके हाथ से निकल चुके हैं और अब वह पैसे-पैसे के लिए मोहताज है, तो सबसे पहले एडमण्ड ने उसकी मदद का इन्तज़ाम किया। उसने अपने रुपयों से एक बैंक खोला और बैंक के ज़रिये मोरेल को बहुत रुपया उधार दिलवा दिया। इससे मोरेल को बड़ी मदद मिली और उसका काम फिर से चल निकला।

अब एडमण्ड को अपने पुराने शत्रुओं से बदला लेना था। यह आसान काम नहीं था, क्योंकि उसके सभी पुराने शत्रु अब बहुत धनी-मानी हो गए थे। डैंग्लर्स सरकारी खज़ाने का खज़ांची बना दिया गया था और विलफोर्ट अब मुख्य न्यायाधीश के पद पर नियुक्त था।

एडमण्ड अब मौके की तलाश में रहने लगा। रुपये-पैसे की अब उसे कमी नहीं थी, इसलिए कभी-कभी वह दूसरे देश की यात्रा पर भी निकल जाया करता था। उसने सुना कि इटली की राजधानी रोम में एक बहुत बड़ा मेला लगने वाला है।

एडमण्ड अपने-आपको 'मोण्टेक्रिस्टो का नवाब' (काउण्ट ऑफ मोण्टेक्रिस्टो) बताता था। काउण्ट का अर्थ होता है नवाब। और नवाबों की तरह वह रहता भी था। धीरे-धीरे उसने बड़े-

बड़े लोगों और धनी-मानियों से अपनी जान-पहचान बढ़ा ली। इस तरह कई बरस बीत गए। धीरे-धीरे उसकी जान-पहचान फर्नान्द के जवान बेटे अलबर्ट से हुई। अलबर्ट को एडमण्ड के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। वह तो उसे 'मोण्टेक्रिस्टो के काउण्ट' के रूप में ही जानता था।

एक बार की बात है, अलबर्ट कहीं जा रहा था। रास्ते में डाकुओं ने उसे पकड़ लिया। एडमण्ड ने डाकुओं को बहुत-सा रुपया देकर अलबर्ट को छुड़ा लिया। एडमण्ड की इस कृपा का यह असर हुआ कि अलबर्ट उसका बिलकुल भक्त बन गया। अब एडमण्ड जो कुछ कहता था अलबर्ट उसे पूरा किए बिना नहीं रहता था।

पेरिस पहुंचने पर अलबर्ट एक दिन एडमण्ड को अपने साथ अपने घर ले गया। एडमण्ड उसके घर जाने से अभी घबराता था, क्योंकि अलबर्ट फर्नान्द का लड़का था। अपने पुराने शत्रु के लड़के को एडमण्ड ने सिर्फ इसलिए बचाया था कि वह मर्सीदिस का भी बेटा था, और एडमण्ड अभी तक मर्सीदिस को भूल नहीं सका था।

एडमण्ड अलबर्ट के साथ उसके घर पहुंचा। फर्नान्द ने उसका स्वागत किया। एडमण्ड ने भी मन मारकर उससे हाथ मिला लिया। फर्नान्द उसे पहचान नहीं सका, क्योंकि अलबर्ट ने उसका परिचय 'मोण्टेक्रिस्टो के काउण्ट' के रूप में कराया था। फिर अलबर्ट अपनी मां को भी बुला लाया। मर्सीदिस भी उस आदमी से मिलना चाहती थी जिसने उसके बेटे को बचाया था।

लेकिन मर्सीदिस ने जैसे ही कमरे में पैर रखा, वह एडमण्ड को फौरन पहचान गई। उसका चेहरा सफेद हो गया और पांव लड़खड़ाने लगे। इतने साल बाद आज एडमण्ड को वह 'मोण्टे-क्रिस्टो के काउण्ट' के रूप में देखकर अपने-आपको संभाल नहीं सकी। लेकिन फिर यह सोचकर, कि कहीं फर्नान्द या अलबर्ट को कुछ शक न हो जाए, उसने अपने-आप पर काबू पाया। उसने



'मोण्टेक्रिस्टो के काउण्ट' का स्वागत किया और अपने बेटे को डाकुओं के हाथ से छुड़ाने के लिए उसे धन्यवाद दिया। एडमण्ड चुपचाप सब कुछ सुनता रहा और फिर दो-चार इधर-उधर की बातें करके उस दिन वहां से चला आया।

उधर रोम के ज़िस बैंक में एडमण्ड के रुपये जमा थे, उसी बैंक के साथ-साथ डैंग्लर्स का कारबार चलता था। एडमण्ड ने बैंक से डैंग्लर्स के नाम एक चिट्ठी लिखवाई और फिर वह उनसे मिलने जा पहुंचा। चिट्ठी में लिखा था, कि ये 'मोण्टेक्रिस्टो के काउण्ट' हैं, पेरिस में ये जितने दिन रहें और इन्हें जितने रुपयों की ज़रूरत पड़े, आप अपने पास से दे दीजिएगा। बाद में बैंक आपका हिसाब कर देगा।

डैंग्लर्स भी एडमण्ड को पहचान नहीं सका। उसने 'मोण्टे-क्रिस्टो के काउण्ट' के रूप में उसका स्वागत किया। लेकिन चिट्ठी को पढ़कर वह कुछ चक्कर में पड़ गया। उसने आश्चर्य से काउण्ट की ओर देखते हुए कहा, 'बड़ी विचित्र बात है। इस चिट्ठी में साफ-साफ यह नहीं लिखा है कि आपको कितने रुपये की ज़रूरत होगी। वैसे आपको रुपये देने में भला मुझे क्या ऐत-राज हो सकता है! पर अच्छा हो कि आप कोई निश्चित रकम बता दें। लाख—दो लाख...'

एडमण्ड हंसकर बोला, 'दो लाख से मेरा क्या होगा! कम से कम चौदह-पन्द्रह लाख हों तो किसी तरह काम चल जाएगा।'

डैंग्लर्स कुछ चिन्ता में पड़ गया। वह पेरिस का सबसे बड़ा महाजन माना जाता था, इसलिए वह यह भी नहीं कहना चाहता था कि मेरे पास इतने रुपये नहीं हैं। उसे सोच में पड़ा हुआ देखकर एडमण्ड बोला, 'क्यों, क्या हुआ? क्या आपको मुझपर विश्वास नहीं है?'

डैंग्लर्स फौरन बोला, 'नहीं नहीं, भला ऐसा कैसे हो सकता है!'

'तब फिर क्या इतने रुपये आपके पास नहीं हैं?'

डेंग्लर्स गर्व से छाती फुलाकर बोला, 'यह आप क्या कह रहे हैं ! आप शायद पेरिस के सबसे बड़े महाजन डेंग्लर्स को पहचानते नहीं हैं। पन्द्रह लाख क्या, आप जब कहिए, मैं पन्द्रह करोड़ रुपये ला सकता हूं।'

एडमण्ड उठते हुए बोला, 'नहीं नहीं, अभी मुझे इतने रुपयों की ज़रूरत नहीं है। आप सिर्फ छः लाख रुपये मेरी कोठी पर भेज दीजिएगा। अच्छा, अब मैं चलता हूं।' यह कहकर एडमण्ड वहां से चला आया।

डेंग्लर्स ने उसके लिए रुपयों का इंतज़ाम कर दिया। अब एडमण्ड अक्सर उसके यहां आने-जाने लगा। उसने डेंग्लर्स की पत्नी को भेंट के रूप में हीरे के दो-तीन गहने दिए। इस तरह धीरे-धीरे उसने डेंग्लर्स से अच्छी जान-पहचान पैदा कर ली। वह इसी मौके की तलाश में था कि किस तरह डेंग्लर्स से उसका सारा पैसा निकलवाया जाए।

पहले तो उसने डेंग्लर्स को ऐसा व्यापार करने की राय दी जिसमें पैसा कम लगा और फायदा काफी हुआ। इससे डेंग्लर्स उसकी राय की कद्र करने लगा। लेकिन बाद में एडमण्ड ने उसे ऐसी राय दी कि उसे बहुत घाटा होने लगा।

लेकिन डेंग्लर्स अपनी झूठी शान में आकर रुपया लगाता ही गया। यहां तक कि उसने दूसरों से उधार लेकर और अपनी ज़मीन-जायदाद गिरवी रखकर कारोबार में रुपया लगाना शुरू किया। अन्त में एक दिन वह दिवालिया घोषित कर दिया गया और उसे पेरिस छोड़कर भाग जाना पड़ा।

इस तरह डेंग्लर्स से बदला लेने के साथ-साथ एडमण्ड अपने पुराने दुश्मन जज विलफोर्ट से बदला लेने की भी तैयारी कर रहा था। उसने पता लगाया कि विलफोर्ट अपनी जवानी में कई गैर-कानूनी काम कर चुका है। एडमण्ड ने लोगों को पैसे देकर किसी तरह जज के खिलाफ सबूत इकट्ठे किए और उन्हें राजा के पास तक पहुंचा दिया। मामले की जांच हुई। विलफोर्ट को

दरबार से निकाल दिया गया। उसकी नौकरी भी जाती रही, और पेरिस के सभ्य समाज में उसकी बड़ी बदनामी हुई। यहां तक कि विलफोर्ट के लिए शहर में रहना मुश्किल हो गया और वह भी एक दिन पेरिस से भाग निकला।

इसी तरह एडमण्ड ने फर्नान्द से भी बदला लिया। जब फर्नान्द को मालूम हुआ कि 'मोण्टेक्रिस्टो का काउण्ट' और कोई नहीं, खुद एडमण्ड दान्ते है तो वह बहुत घबराया। उसने



एडमण्ड के खिलाफ फिर से चाल चलनी चाही, लेकिन इस बार एडमण्ड ने उसकी दाल नहीं गलने दी। एडमण्ड ने उसे धमकी दी कि वह उसकी सारी पोल खोल देगा। उसने फर्नान्द के खिलाफ भी काफी सबूत इकट्ठे कर लिए। फर्नान्द को बचकर निकलने का कोई रास्ता नजर नहीं आया और उसने आत्म-हत्या कर ली।

इस तरह एडमण्ड ने अपने सभी पुराने दुश्मनों से बदला लिया। अब उसकी राह में कोई कांटा नहीं था। बाद में एक बहुत सुन्दर लड़की से उसने शादी की और वह आराम से रहने लगा।

ooo

मुद्रक । सोहन प्रिंटर्स शाहदरा, दिल्ली-32

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels)
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)
खजाने की खोज में (Treasure Island)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमारखां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
काला फूल (Black Tulip)
कैदी की करामात (Count of Monte Cristo)
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर
(Around the World in 80 Days)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा
(20 Thousand Leagues under the Sea)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimms' Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं
(The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबीडिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)